ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 2, March 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

छायावादी काव्य में प्रकृति योजना

बीरम देव

सहायक आचार्य, हिंदी, राजकीय कन्या महाविद्यालय, बूंदी, राजस्थान, भारत

सार

छायावादी काव्य में प्रकृति के सर्वाधिक आकर्षक लौकिक तथा अलौकिक रूपों का चित्रण किया गया है। इस धारा के समस्त कवि प्रकृति के पुजारी हैं। पंत, प्रसाद, निराला, दिनकर आदि ने प्रकृति को परम रूपसी नारी के रूप में चित्रित किया है। छायावाद हिंदी साहित्य के रोमांटिक उत्थान की वह काव्य-धारा है जो लगभग ई.स. 1918 से 1936 तक की प्रमुख युगवाणी रही। जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, पंडित माखन लाल चतुर्वेदी इस काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। छायावाद नामकरण का श्रेय मुकुटधर पाण्डेय को जाता है। मुकुटधर पाण्डेय ने श्री शारदा पत्रिका में एक निबंध प्रकाशित किया जिस निबंध में उन्होंने छायावाद शब्द का प्रथम प्रयोग किया | प्रकृति प्रेम, नारी प्रेम, मानवीकरण, सांस्कृतिक जागरण, कल्पना की प्रधानता आदि छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएं हैं। छायावाद ने हिंदी में खड़ी बोली कविता को पूर्णतः प्रतिष्ठित कर दिया। इसके बाद ब्रजभाषा हिंदी काव्य धारा से बाहर हो गई। इसने हिंदी को नए शब्द, प्रतीक तथा प्रतिबिंब दिए। इसके प्रभाव से इस दौर की गद्य की भाषा भी समृद्ध हुई। इसे 'साहित्यिक खड़ीबोली का स्वर्णयुग' कहा जाता है।छायावाद के नामकरण का श्रेय 'मुकुटधर पांडेय' को दिया जाता है। इन्होंने सर्वप्रथम 1920 ई में जबलपुर से प्रकाशित श्रीशारदा (जबलपुर) पत्रिका में 'हिंदी में छायावाद' नामक चार निबंधों की एक लेखमाला प्रकाशित करवाई थी।[3] मुकुटधर पांडेय जी द्वारा रचित कविता "कुररी के प्रति" छायावाद की प्रथम कविता मानी जाती है ।

परिचय

हिंदी कविता में छायावाद का युग द्विवेदी युग के बाद आया। द्विवेदी युग की कविता नीरस उपदेशात्मक और इतिवृत्तात्मक थी। छायावाद में इसके विरुद्ध विद्रोह करते हुए कल्पनाप्रधान, भावोन्मेशयुक्त कविता रची गई। यह भाषा और भावों के स्तर पर अपने दौर के बांग्ला के सुप्रसिद्ध कवि और नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ ठाकुर की गीतांजली से बहुत प्रभावित हुई। यह प्राचीन संस्कृत साहित्य (वेदों, उपनिषदों तथा कालिदास की रचनाओं) और मध्यकालीन हिंदी साहित्य (भक्ति और श्रृंगार की कविताओं) से भी प्रभावित हुई। इसमें बौद्ध दर्शन और सूफी दर्शन का भी प्रभाव लक्षित होता है। छायावादयुग उस सांस्कृतिक और साहित्यिक जागरण का सार्वभौम विकासकाल था जिसका आरंभ राष्ट्रीय परिधि में भारतेंदुयुग से हुआ था।[1]

> वस्तुजगत् अपना घनत्व खोकर इस जग में
> सूक्ष्म रूप धारण कर लेता, भावद्रवित हो।

कवि के केवल सूक्ष्म भावात्मक दर्शन का ही नहीं, 'छाया' से उसके सूक्ष्म कलाभिव्यजंन का भी परिचय मिलता है। उसकी काव्यकला में वाच्यार्थ की अपेक्षा लाक्षणिकता और ध्वन्यात्मकता है। अनुभूति की निगूढ़ता के कारण अस्फुटता भी है। शैली में राग की नवोद्बुद्धता अथवा नवीन व्यंजकता है।

द्विवेदी युग में कविता का ढाँचा पद्य का था। वस्तुत: गद्य का प्रबंध ही उसमें पद्य हो गया था, भाषा भी गद्यवत् हो गई थी। छायावाद ने पद्य का ढाँचा तोड़कर खड़ी बोली को काव्यात्मक बना दिया। पद्य में स्थूल इतिवृत्त था, छायावाद के काव्य में भावात्मक अतंर्वृत्त था, छायावाद के काव्य में भावात्मक अंतर्वृत्त आ गया। भाव के अनुरूप ही छायावाद की भाषा और छंद भी रागात्मक और रसात्मक हो गया। ब्रजभाषा के बाद छायावाद द्वारा गीतकाव्य का पुनरुत्थान हुआ। छायावाद युग के प्रतिनिधि कवि हैं- प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी, रामकुमार। पूर्वानुगामी सहयोगी हैं- माखनलाल और 'नवीन'।

गीतकाव्य के बाद छायावाद में भी महाकाव्य का निर्माण हुआ। तुलसीदास जैसे 'स्वांत:' को लेकर लोकसंग्रह के पथ पर अग्रसर हुए थे वैसे ही छायावाद के कवि भी 'स्वात्म' को लेकर एकांत के स्वगत जगत् से सार्वजनिक जगत् में अग्रसर हुए। प्रसाद की 'कामायनी' और पंत का 'लोकायतन' इसका प्रमाण है। 'कामायनी' सिंधु में विंदु (एकांत अंतर्जगत्) की ओर है, 'लोकायतन' विंदु में सिंधु (सार्वजनिक जगत्) की ओर।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

छायावादी काव्य का विश्लेषण करने पर हम उसमें निम्नांकित प्रवृत्तियां पाते हैं :-

1. वैयक्तिकता : छायावादी काव्य में वैयक्तिकता का प्राधान्य है। कविता वैयक्तिक चिंतन और अनुभूति की परिधि में सीमित होने के कारण अंतर्मुखी हो गई, कवि के अहम् भाव में निबद्ध हो गई। कवियों ने काव्य में अपने सुख-दु:ख,उतार-चढ़ाव,आशा-निराशा की अभिव्यक्ति खुल कर की। उसने समग्र वस्तुजगत को अपनी भावनाओं में रंग कर देखा। जयशंकर प्रसाद का'आंसू' तथा सुमित्रा नंदन पंत के 'उच्छवास' और 'आंसू' व्यक्तिवादी अभिव्यक्ति के सुंदर निदर्शन हैं। इसके व्यक्तिवाद के स्व में सर्व सन्निहित है।डॉ. शिवदान सिंह चौहान इस संबंध में अत्यंत मार्मिक शब्दों में लिखते हैं -"कवि का मैं प्रत्येक प्रबुद्ध भारतवासी का मैं था,इस कारण कवि ने विषयगत दृष्टि से अपनी सूक्ष्मातिसूक्ष्म अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए जो लाक्षणिक भाषा और अप्रस्तुत रचना शैली अपनाई,उसके संकेत और प्रतीक हर व्यक्ति के लिए सहज प्रेषणीय बन सके।"छायावादी कवियों की भावनाएं यदि उनके विशिष्ट वैयक्तिक दु:खों के रोने-धोने तक ही सीमित रहती,उनके भाव यदि केवल आत्मकेंद्रित ही होते तो उनमें इतनी व्यापक प्रेषणीयता कदापि न आ पाती।[2] निराला ने लिखा है-

मैंने मैं शैली अपनाई,

देखा एक दु:खी निज भाई

दुख की छाया पड़ी हृदय में

झट उमड़ वेदना आई

इससे स्पष्ट है कि व्यक्तिगत सुख-दु:ख की अपेक्षा अपने से अन्य के सुख-दुख की अनूभूति ने ही नए कवियों के भाव-प्रवण और कल्पनाशील हृदयों को स्वच्छंदतावाद की ओर प्रवृत्त किया।

2. प्रकृति-सौंदर्य और प्रेम की व्यंजना : छायावादी कवि का मन प्रकृति चित्रण में खूब रमा है और प्रकृति के सौंदर्य और प्रेम की व्यंजना छायावादी कविता की एक प्रमुख विशेषता रही है। छायावादी कवियों ने प्रकृति को काव्य में सजीव बना दिया है। प्रकृति सौंदर्य और प्रेम की अत्यधिक व्यंजना के कारण ही डॉ. देवराज ने छायावादी काव्य को 'प्रकृति-काव्य' कहा है। छायावादी काव्य में प्रकृति-सौंदर्य के अनेक चित्रण मिलते हैं; जैसे 1. आलम्बन रूप में प्रकृति चित्रण 2.उद्दीपन रूप में प्रकृति चित्रण 3.प्रकृति का मानवीकरण 4.नारी रूप में प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन 5.आलंकारिक चित्रण 6.प्रकृति का वातावरण और पृष्ठभूमि के रूप में चित्रण 7. रहस्यात्मक अभिव्यक्ति के साधन के रूप में चित्रण।

प्रसाद,पंत,निराला,महादेवी आदि छायावाद के सभी प्रमुख कवियों ने प्रकृति का नारी रूप में चित्रण किया और सौंदर्य व प्रेम की अभिव्यक्ति की। पंत की कविता का एक उदाहरण देखिए-

बांसों का झुरमुट

संध्या का झुटपुट

हैं चहक रहीं चिड़ियां

टी वी टी टुट् टुट्

छायावादी कवि के लिए प्रकृति की प्रत्येक छवि विस्मयोत्पादक बन जाती है। वह प्राकृतिक सौंदर्य पर विमुग्ध होकर रहस्यात्मकता की ओर उन्मुख हो जाता है-

मैं भूल गया सीमाएं जिससे

वह छवि मिल गई मुझे

छायावादी कवि ने निजी अनुभूतियों का व्यक्तिकरण प्रकृति के माध्यम से किया है; जैसे-

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

मैं नीर भरी दुख की बदली [3]

छायावादी कवि सौंदर्यानुभूति से अभिभूत है। अपने आंतरिक सौंदर्य का उद्घाटन प्रकृति के माध्यम से करता हुआ दिखाई पड़ता है-

शशि मुख पर घूंघट डाले,अंचल में दीप छिपाए

जीवन की गोधूलि में,कौतूहल से तुम आए ...प्रसाद

अधिकांश छायावादी कवियों ने प्रकृति के कोमल रूप का चित्रण किया है,परंतु कहीं-कहीं उसके उग्र रूप का चित्रण भी हुआ है।

3.शृंगारिकता :छायावादी काव्य में शृंगार-भावना की प्रधानता है,परंतु यह शृंगार रीतिकालीन स्थूल एवं ऐन्द्रिय शृंगार से भिन्न है।छायावादी शृंगार-भावना मानसिक एवं अतीन्द्रिय है। यह शृंगार-भावना दो रूपों में अभिव्यक्त हुई है- 1. नारी के अतीन्द्रिय सौंदर्य चित्रण द्वारा 2. प्रकृति पर नारी-भावना के आरोप के माध्यम से। पंत और प्रसाद ने अछूती कल्पनाओं की तूलिका से नारी के सौंदर्य का चित्रण किया है। एक उदाहरण देखिए-

तुम्हारे छूने में था प्राण

संग में पावन गंगा स्नान

तुम्हारी वाणी में कल्याणी

त्रिवेणी की लहरों का गान

नारी का अतीन्द्रिय सौंदर्य चित्रण प्रसाद जी द्वारा श्रद्धा के सौंदर्य में द्रष्टव्य है-

नील परिधान बीच सुकुमार,

खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।

खिला हो ज्यों बिजली का फूल,

मेघवन बीच गुलाबी रंग।

निराला की 'जुही की कली' कविता में दूसरे प्रकार की शृंगार-भावना का चित्र है। प्रसाद ने'कामायनी' में सौंदर्य को चेतना का उज्ज्वल वरदान माना है। इस प्रकार छायावादी शृंगार-भावना और उसके सभी उपकरणों(नारी,सौंदर्य,प्रेम) का चित्रण सूक्ष्म एवं उदात्त है। उसमें वासना की गंध बहुत कम है।

छायवादी कवि को प्रेम के क्षेत्र में जाति,वर्ण,सामाजिक रीति-नीति,रुढ़ियां और मिथ्या मान्यताएं मान्य नहीं हैं; निराला जी लिखते हैं -

दोनों हम भिन्न वर्ण, भिन्न जाति, भिन्न रूप।

भिन्न धर्म भाव, पर केवल अपनाव से प्राणों से एक थे॥

इनके प्रेम चित्रण में कोई लुकाव-छिपाव-दुराव नहीं है। उसमें कवि की वैयक्तिकता है। इनकी प्रणय गाथा का अंत प्राय: दु:ख,निराशा तथा असफलता में होता है। अत: उसमें मिलन की अनुभूतियों की अपेक्षा विरहानुभूतियों का चित्रण अधिक हुआ है और इस दिशा में उन्हें आशातीत सफलता भी मिली; पंत के शब्दों में

-शून्य जीवन के अकेले पृष्ठ पर

विरह अहह कराहते इस शब्द को

किसी कुलिश की तीक्ष्ण चुभती नोंक से

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

निठुर विधि ने आंसुओं से है लिखा

4. रहस्यानुभूति :छायावादी कवि को अज्ञात सत्ता के प्रति एक विशेष आकर्षण रहा है। वह प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ में इसी सत्ता के दर्शन करता है।[4] उसका इस अंनत के प्रति प्रमुख रूप से विस्मय तथा जिज्ञासा का भाव है। लेकिन उनका रहस्य जिज्ञासामूलक है, उसे कबीर और दादू के रहस्यवाद के समक्ष खड़ा नहीं किया जा सकता।निराला तत्व ज्ञान के कारण, तो पंत प्राकृतिक सौंदर्य से रहस्योन्मुख हुए। प्रेम और वेदना ने महादेवी को रहस्योन्मुख किया तो प्रसाद ने उस परमसत्ता को अपने बाहर देखा। यद्यपि महादेवी में अवश्य ही रहस्य-साधना की दृढ़ता दिखाई पड़ती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में,"कवि उस अनंत अज्ञात प्रियतम को आलंबन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से अभिव्यंजना करते हैं। ...तथा छायावाद का एक अर्थ रहस्यवाद भी है। अत: सुधी आलोचक रहस्यवाद को छायावाद का प्राण मानते हैं ।"छायावादी कवियों की कुछ रहस्य अनुभूतियों के उदाहरण देखिए-

हे अनंत रमणीय कौन तुम!

यह मैं कैसे कह सकता!

कैसे हो,क्या हो इसका तो

भार विचार न सह सकता? - प्रसाद

प्रिय चिरन्तन है सजनि

क्षण-क्षण नवीन सुहागिनी मैं

तुम मुझ में फिर परिचय क्या! --महादेवी

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि

तुने कैसे पहचाना? -- पंत

किस अनंत का नीला अंचल हिला-हिलाकर आती तुम सजी मंडलाकर -- निराला

तृणवीरुध लहलहे हो किसके रस से सिंचे हुए --प्रसाद

तोड़ दो यह क्षितिज मैं भी देख लूं उस ओर क्या है -- महादेवी

5.तत्त्व चिंतन : छायावादी कविता में अद्वैत-दर्शन,योग-दर्शन,विशिष्टाद्वैत-दर्शन,आनंदवाद आदि के अंतर्गत दार्शनिक चिंतन भी मिलता है। प्रसाद का मूल दर्शन आनंदवाद है तो महादेवी ने अद्वैत,सांख्य एवं योग दर्शन का विवेचन अपने ढ़ग से किया है।

6. वेदना और करुणा की विवृत्ति : छायावादी कविता में वेदना की अभिव्यक्ति करुणा और निराशा के रूप में हुई है। हर्ष-शोक,हास-रुदन, जन्म-मरण,विरह-मिलन आदि से उत्पन्न विषमताओं से घिरे हुए मानव-जीवन को देखकर कवि हृदय में वेदना और करुणा उमड़ पड़ती है।जीवन में मानव-मन की आकांक्षाओं और अभिलाषाओं की असफलता पर कवि-हृदय क्रन्दन करने लगता है। छायावादी कवि सौंदर्य प्रेमी होता है,किंतु सौंदर्य की क्षणभंगुरता को देख उसका हृदय आकुल हो उठता है। हृदयगत भावों की अभिव्यक्ति की अपूर्णता,अभिलाषाओं की विफलता,सौंदर्य की नश्वरता, प्रेयसी की निष्ठुरता, मानवीय दुर्बलताओं के प्रति संवेदनशीलता और प्रकृति की रहस्यमयता आदि अनेक कारणों से छायावादी कवि के काव्य में वेदना और करुणा की अधिकता पाई जाती है। [5]प्रसाद ने "आंसू" में वेदना को साकार रूप दिया है। पंत तो काव्य की उत्पत्ति ही वेदना को मानते हैं -

वियोगी होगा पहला कवि, आह से निकला होगा गान।

उमड़ कर आंखों से चुपचाप, बही होगी कविता अजान॥

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

महादेवी तो पीड़ा में ही अपने प्रिय को ढूंढ़ती हैं -

तुमको पीड़ा में ढूंढ़ा, तुममें ढूंढूंगी पीड़ा।

और पंत जी कहते हैं -

चिर पूर्ण नहीं कुछ जीवन में

अस्थिर है रूप जगत का मद ।

संसार में दुख और वेदना को देखकर छायावादी कवि पलायनवादी भी हुआ। वह इस संसार से ऊब चुका है और कहीं ओर चला जाना चाहता है। इसका मुख्य कारण यह है कि वह इस संसार में दुख ही दुख देखता है, यहां सर्वत्र सुख का अभाव दृष्टिगोचर होता है। इस विषय में कवि पंत की अभिव्यक्ति द्रष्टव्य है:-

यहां सुख सरसों,शोक सुमेरु

अरे जग है जग का कंकाल

वृथा रे,यह अरण्य चीत्कार

शांति,सुख है उस पार

निराला भी जग के उस पार जाना चाहते हैं। प्रसाद भी अत्यंत प्रसिद्ध गीत में नाविक से इस कोलाहलपूर्ण संसार से दूर चलने का अनुरोध करते हैं।

7. मानवतावादी दृष्टिकोण : छायावादी काव्य भारतीय सर्वात्मवाद तथा अद्वैतवाद से गहरे रूप से प्रभावित हुआ। इस काव्य पर रामकृष्ण परमहंस,विवेकानंद,गांधी,टैगोर तथा अरविंद के दर्शन का भी काफी प्रभाव रहा।स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति के कारण छायावादी कवि को साहित्य के समान धर्म,दर्शन आदि में भी रुढ़ियों एवं मिथ्या परम्पराएं मान्य नहीं हैं। रविंद्रनाथ ठाकुर,जो बंगला साहित्य में मानवतावाद का उद्घोष पहले ही कर चुके थे, का प्रभाव छायावादी कवियों पर भी रहा।छायावादी कवि सारे संसार से प्रेम करता है। उसके लिए भारतीय और अभारतीय में कोई भेद नहीं क्योंकि सर्वत्र एक ही आत्मा व्याप्त है। विश्वमानवता की प्रतिष्ठा उसका आदर्श है।[6]

8.नारी के प्रति नवीन दृष्टिकोण : नारी के प्रति छायावाद ने सर्वथा नवीन दृष्टिकोण अपनाया है। यहां नारी वासना की पूर्ति का साधन नहीं है,यहां तो वह प्रेयसी,जीवन-सहचरी,मां आदि विविध रूपों में उतरी है। उसका मुख्य रूप प्रेयसी का ही रहा है। यह प्रेयसी पार्थिव जगत की स्थूल नारी नहीं है,वरन कल्पना लोक की सुकुमारी देवी है। नारी के संबंध में प्रसाद जी कहते हैं-

नारी तुम केवल श्रद्धा हो

विश्वास-रजत-नग-पगतल में

पीयूष-स्रोत सी बहा करो

जीवन के सुंदर समतल में

छायावादी कवि ने युग-युग से उपेक्षित नारी को सदियों की कारा से मुक्त करने का स्वर अलापा। छायावादी कवि कह उठता है - "मुक्त करो नारी को,युग-युग की कारा से बंदिनी नारी को।"

निसंदेह छायावाद ने नारी को मानवीय सहृदयता के साथ अंकित किया है। पंत की प्रसिद्ध पंक्ति है -"देवि मां सहचरि प्राण!!!" प्रसाद ने नारी को आदर्श श्रद्धा के रूप में देखा जो रागात्मक वृत्ति की प्रतीक है और मनुष्य को मंगल एवं श्रेय के पथ पर ले जाने वाली है। निराला नारी की यथार्थ स्थिति को काफी पहचान कर उसे चित्रित करते हैं। उन्होंने विधवा को इष्ट देव के मंदिर की पूजा कहा। इलाहाबाद के पथ पर तोड़ती हुई मजदूरनी का चित्र खिंचा, तुलसी की पत्नी रत्नावली का चित्रण रीतिकालीन नारी विषयक धारणा को तोड़नेवाली के रूप में किया।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

9. आदर्शवाद : छायावाद में आंतरिकता की प्रवृत्ति की प्रधानता है। उसमें चीजों के बाह्य स्थूल रूप चित्रण की प्रवृत्ति नहीं है। अपनी इस अंतर्मुखी प्रवृत्ति के कारण उनका दृष्टिकोण काव्य के भावजगत और शैली में आदर्शवादी रहा। उसे स्थूलता के चित्रण की बजाय अपनी अनुभूतियां अधिक यथार्थ लगी हैं। यही कारण है कि उसका काव्य संबंधी दृष्टिकोण कल्पनात्मक रहा और उसमें सुंदर तत्त्व की प्रधानता बनी रही। छायावादी कवि के इस आदर्शवादी, कल्पनात्मक दृष्टिकोण को उसके कला पक्ष में भी सहज ही देखा जा सकता है।

10.स्वच्छंदतावाद : छायावादी कवि ने अहंवादी होने के कारण विषय,भाव,कला,धर्म,दर्शन और समाज के सभी क्षेत्रों में स्वछंदतावादी प्रवृत्ति को अपनाया। उसे अपने हृदयोदगार को अभिव्यक्त करने के लिए किसी प्रकार का शास्त्रीय बंधन और रुढ़ियां स्वीकार नहीं हैं। भाव-क्षेत्र में भी उसने इसी क्रांति का प्रदर्शन किया। उसमें 'मैं' की शैली अपनाई, हालांकि उसके 'मैं' में समूचा समाज सन्निहित है। अब छायावादी कवि के लिए प्रत्येक क्षेत्र और प्रत्येक दिशा का मार्ग उन्मुक्त था। छायावादी कवि के लिए कोई भी वस्तु काव्य-विषय बनने के लिए उपयुक्त थी। इसी स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति के फलस्वरूप छायावादी काव्य में सौंदर्य और प्रेम चित्रण, प्रकृति-चित्रण,राष्ट्रप्रेम,रहस्यात्मकता,वेदना और करुणा, वैयक्तिक सुख-दु:ख, अतीत प्रेम, कलावाद,प्रतीकात्मकता और लाक्षणिकता,अभिव्यंजना आदि सभी प्रवृत्तियां मिलती है। उसे पुरानी पिटी-पिटाई राहों पर चलना अभिप्रेत नहीं है।संक्षेप में कह सकते हैं कि छायावाद वैयक्तिक रुचि-स्वातंत्र्य का युग है।[7]

11.देश-प्रेम एवं राष्ट्रीय भावना : राष्ट्रीय जागरण की क्रोड़ में पलने-पनपने वाला स्वच्छंदतावादी छायावाद साहित्य यदि रहस्यात्मकता और राष्ट्र प्रेम की भावनाओं को साथ-साथ लेकर चला है, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। सच तो यह है कि राष्ट्रीय जागरण ने छायावाद के व्यक्तिवाद को असामाजिक पथों पर भटकने से बचा लिया। छायावादी कवि में आंतरिकता की कितनी भी प्रधानता क्यों न हो वह अपने युग से निश्चित रूप से प्रभावित हुआ। यही कारण है कि जयशंकर प्रसाद पुकार उठते हैं -

अरुण यह मधुमय देश हमारा ...

या

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती

माखन लाल चतुर्वेदी कह उठते हैं -

मुझे तोड़ लेना वनमाली

उस पथ पर तुम देना फेंक।

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने

जिस पथ जावें वीर अनेक।

12.प्रतीकात्मकता :प्रतीकात्मकता छायावादियों के काव्य की कला पक्ष की प्रमुख विशेषता है। प्रकृति पर सर्वत्र मानवीय भावनाओं का आरोप किया गया और उसका संवेदनात्मक रूप में चित्रण किया गया,इससे यह स्वतंत्र अस्तित्व और व्यक्तित्व से विहीन हो गई और उसमें प्रतीकात्मकता का व्यवहार किया गया। उदाहरणार्थ, फूल सुख के अर्थ में,शूल दुख के अर्थ में,उषा प्रफुल्लता के अर्थ में,संध्या उदासी के अर्थ में,झंझा-झकोर गर्जन मानसिक द्वन्द्व के अर्थ में,नीरद माला नाना भावनाओं के अर्थ में प्रयुक्त हुए।दार्शनिक अनुभूतियों की अभिव्यंजना एवं प्रेम की सूक्ष्मातिसूक्ष्म दशाओं के अंकन में भी इस प्रतीकात्मकता को देखा जा सकता है।

13.चित्रात्मक भाषा एवं लाक्षणिक पदावली : अन्य अनुपम विशिष्टताओं के अतिरिक्त केवल चित्रात्मक भाषा के कारण हिंदी वाङ्मय में छायावादी काव्य को स्वतंत्र काव्य धारा माना जा सकता है।कविता के लिए चित्रात्मक भाषा की अपेक्षा की जाती है और इसी गुण के कारण उसमें बिम्बग्राहिता आती है। छायावादी कवि इस कला में परम विदग्ध हैं।"छायावादी काव्य में प्रसाद ने यदि प्रकृति तत्त्व को मिलाया, निराला ने उसे मुक्तक छंद दिया,पंत ने शब्दों को खराद पर चढ़ाकर सुड़ौल और सरस बनाया तो महादेवी ने उसमें प्राण डाले,उसकी भावात्मकता को समृद्ध किया।"प्रसाद की निम्नांकित पंक्तियों में भाषा की चित्रात्मकता की छटा देखते ही बनती है;-

शशि मुख पर घूंघट डाले,अंचल में दीप छिपाए।

जीवन की गोधूलि में,कौतूहल से तुम आए।[8]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

छायावादी कवि ने सीधी सादी भाव संबंधित भाषा से लेकर लाक्षणिक और अप्रस्तुत-विधानों से युक्त चित्रमयी भाषा तक का प्रयोग किया और कदाचित इस क्षेत्र में उसने सर्वाधिक मौलिकता का प्रदर्शन किया।छायावादी कवि ने परम्परा-प्राप्त उपमानों से संतुष्ट न होकर नवीन उपमानों की उद्भावना की। इसमें अप्रस्तुत-विधान और अभिव्यंजना-शैली में शतश: नवीन प्रयोग किए। मूर्त में अमूर्त का विधान उसकी कला का विशेष अंग बना। निराला जी विधवा का चित्रण करते हुए लिखते हैं- "वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा सी"। यही कारण है कि छायावादी काव्यधारा के पर्याप्त विरुद्ध लिखने वाले आलोचक रामचंद्र शुक्ल को भी लिखना पड़ गया कि "छायावाद की शाखा के भितर धीरे-धीरे काव्य शैली का बहुत अच्छा विकास हुआ,इसमें संदेह नहीं।"इसमें भावावेश की आकुल व्यंजना, लाक्षणिक वैचित्र्य,मूर्त-प्रत्यक्षीकरण,भाषा की वक्रता,विरोध चमत्कार,कोमल पद विन्यास इत्यादि काव्य का स्वरूप संगठित करने वाली प्रचुर सामग्री दिखाई पड़ी। उन्होंने पंत काव्य के कुछ उदाहरण भी उपन्यस्त किए -"धूल की ढ़ेरी में अनजान। छिपे हैं मेरे मधुमय गान।मर्म पीड़ा के हास। कौन तुम अतुल अरूप अनाम।"14. गेयता : छायावादी कवि केवल साहित्यिक ही नहीं वरन संगीत का भी कुशल ज्ञाता है। छायावाद का काव्य छंद और संगीत दोनों दृष्टियों से उच्च कोटि का है। इसमें प्राचीन छंदों के प्रयोग के साथ-साथ नवीन छंदों का भी निर्माण किया गया। इसमें मुक्तक छंद और अतुकांत कविताएं भी लिखी गई। छायावादी कवि प्रणय,यौवन और सौंदर्य का कवि है। गीति-शैली उसके गृहीत विषय के लिए उपयुक्त थी। गीति-काव्य के सभी गुण-संक्षिप्तता,तीव्रता,आत्माभिव्यंजना,भाषा की मसृणता आदि उपलब्ध होते हैं।गीति-काव्य के लिए सौंदर्य-वृत्ति और स्वानुभूति के गुणों का होना आवश्यक है, सौभाग्य से सारी बातें छायावादी कवियों में मिलती हैं।दूसरी एक और बात भी है कि आधुनिक युग गीति-काव्य के लिए जितना उपयुक्त है उतना प्रबंध-काव्यों के लिए नहीं। छायावादी साहित्य में, प्रगीत,खंड काव्य और प्रबंध काव्य भी लिखे गए और वीर गीति,संबोध गीति, शोकगीति,व्यंग्य गीति आदि काव्य के अन्य रूप विधानों का प्रयोग किया गया। छायावादी कवियों की भाषा और छंद केवल बुद्धिविलास,वचन भंगिमा,कौशल या कौतुक वृत्ति से प्रेरित नहीं रहा बल्कि उनकी कविता में भाषा भावों का अनुसरण करती दीखती है और अभिव्यंजना अनुभूति का।15. अलंकार-विधान : अलंकार योजना में प्राचीन अलंकारों के अतिरिक्त अंग्रेजी साहित्य के दो नवीन अलंकारों-मानवीकरण तथा विशेषणविपर्यय का भी अच्छा उपयोग किया गया है।प्राकृतिक घटनाओं प्रात:,संध्या,झंझा,बादल और प्राकृतिक चीजों सूर्य,चंद्रमा आदि पर जहां मानवीय भावनाओं का आरोप किया गया है वहां मानवीकरण है। विशेषण विपर्यय में विशेषण का जो स्थान अभिधावृत्ति के अनुसार निश्चित है,उसे हटाकर लक्षणा द्वारा दूसरी जगह आरोप किया जाता है।पंत ने बच्चों के तुतले भय का प्रयोग उनकी तुतली बोली में व्यंजित भय के लिए किया है। इसी प्रकार" तुम्हारी आंखों का बचपन खेलता जब अल्हड़ खेल।" छायावादी कवि ने अमूर्त को मूर्त और मूर्त को अमूर्त रूप में चित्रित करने के लिए अनेक नवीन उपमानों की उद्भावना की है; जैसे - "कीर्ति किरण सी नाच रही है " तथा "बिखरी अलकें ज्यों तर्क जाल।" इसके अतिरिक्त उपमा,रूपक,उल्लेख,संदेह,विरोधाभास,रूपकातिशयोक्ति तथा व्यतिरेक आदि अलंकारों का भी सुंदर प्रयोग किया गया है।16. कला कला के लिए :- स्वातन्त्र्य तथा आत्माभिव्यक्ति के अधिकार की भावना के परिणामस्वरूप छायावादी काव्य में "कला कला के लिए" के सिद्धांत का अनुपालन रहा है। वस्तु-चयन तथा उसके प्रदर्शन कार्य में कवि ने पूर्ण स्वतंत्रता से काम लिया है। उसे समाज तथा उसकी नैतिकता की तनिक भी चिंता नहीं है। यही कारण है कि उसके काव्य में 'सत्' और 'शिव' की अपेक्षा 'सुंदर' की प्रधानता रही है। छायावादी काव्य इस "कला कला के लिए" के सिद्धांत में पलायन और प्रगति दोनों सन्निहित हैं। एक ओर अंतर्मुखी प्रवृत्ति के कारण जहां जन-जीवन से कुछ उदासीनता है तो दूसरी ओर काव्य और समाज में मिथ्या रूढ़ियों के प्रति सबल विद्रोह भी। अत: छायावाद पर केवल पलायनवाद का दोष लगाना न्याय संगत नहीं होगा।अंतत: डॉ. नगेन्द्र ने इस साहित्य की समृद्धि की समता भक्ति साहित्य से की है। "इस तथ्य से कतई इनकार नहीं किया जा सकता कि भाषा,भावना एवं अभिव्यक्ति-शिल्प की समृद्धि की दृष्टि से छायावादी काव्य अजोड़ है। विशुद्ध अनुभूतिपरक कवित्वमयता की दृष्टि से भी इसकी तुलना अन्य किसी युग के साहित्य से नहीं की जा सकती।इस दृष्टि से भक्ति काल के बाद आधुनिक काल का यह तृतीय चरण हिंदी साहित्य के इतिहास का दूसरा स्वर्ण-युग कहकर रेखांकित किया जा सकता है।इस कविता का गौरव अक्षय है,उसकी समृद्धि की समता केवल भक्ति काव्य ही कर सकता है।"[9]

विचार-विमर्श

"स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह ही छायावाद है"

डॉ रामकुमार वर्मा के अनुसार परमात्मा की छाया आत्मा में पड़ने लगी है और आत्मा की छाया परमात्मा में यही छायावाद है।अचार रामचंद्र शुक्ल के अनुसार छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों से समझना चाहिए एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहां उसका संबंध का वस्तु से होता है अर्थात जहां कभी उसे अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलंबन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।जयशंकर प्रसाद के अनुसार जब वेदना के आधार पर स्वामीभूतमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिंदी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया। ध्वन्यात्मकता, लक्षिणिकता सौंदर्य मय प्रतीक विधान तथा उपचार वक्ता के साथ स्वामी भूत की विवृति छायावाद की विशेषताएं हैं।

छायावादी युग की विशेषताएं-

प्रकृति का मानवीकरण-प्रकृति पर मानव व्यक्तित्व का आरोप छायावाद की मुख्य विशेषता है। छायावादी कवियों ने प्रकृति को चेतना मानते हुए प्रकृति का सजीव चित्रण किया है।कल्पना की प्रधानता-छायावादी काव्य में कल्पना को प्रधानता दी गई हैं छायावादी कवियों

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

ने यथार्थ की अपेक्षा कल्पना को काव्य अधिक अपनाया है।व्यक्तिवाद की प्रधानता-छायावादी काव्य में व्यक्तिगत भावनाओं की प्रधानता है छायावाद में कवियों ने अपने सुख दुख एवं हर्ष शोक को ही वाणी प्रदान करते हुए खुद को अभिव्यक्त किया है।श्रंगार भावना-छायावादी काव्य मुक्ता श्रंगारी काव्य छायावाद का श्रंगार उपयोग उपभोग की वस्तु नहीं अपितु कौतूहल और विस्मय विषय है।नारी भावना-छायावादी कवियों ने नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाकर समाज में उसके सम्मानित स्थान को प्रतिष्ठित किया रीतिकालीन कवियों ने नारी को विलास की वस्तु और उपभोग की सामग्री मात्र माना जबकि छायावादी कवियों ने उसे प्रेरणा का पावन उत्सव मनाते हुए गरमा प्रदान की।राष्ट्रप्रेम की अभिव्यक्ति-छायावादी काव्य में राष्ट्रीयता के स्वर भी मुखर हुए हैं। प्रसाद जी ने अपने नाटकों में जो गीत योजना की है उसमें राष्ट्रीय भावना की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है।अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम-अज्ञात सत्ता के प्रति कवि की हृदय गति प्रेम की अभिव्यक्ति पाई जाती है। ऐसा ज्ञात सकता को कवि कभी प्रेसीय के रूप में कवि चेतन प्रकृति के रूप में दिखता है छायावाद की यह अज्ञात सत्ता ब्रह्म से भिन्न है।[10]
जीवन दर्शन-छायावादी कवियों ने जीवन के प्रति भावात्मक दृष्टिकोण को अपनाया है। इसका मूल दर्शन सर्वात्मवाद है। संपूर्ण जगत मानव चेतना में संपादित दिखाई देता है।रहस्यवाद-छायावादी कविता में रहे स्वाद एक आवश्यक प्रवृत्ति है। यह प्रवृत्ति हिंदी साहित्य की एक ऐसी प्रवृत्ति रही है इस कारण छायावाद के प्रत्येक कवि ने एक फैशन अथवा व्यक्तिगत रुचि से इस प्रवृत्ति को ग्रहण किया है।लाक्षणिकता-छायावादी कविताओं में लाक्षणिकता का अभूतपूर्व सौंदर्य भाव मिलता है। इन कवियों से सीधी-सादी भाषा को ग्रहण कर लाक्षणिक एवं प्रस्तुत प्रधानों द्वारा उसे सर्वाधिक मौलिक बनाया है।छंद विधान-छायावादी काव्य छंद के लिए भी अत्यधिक उल्लेखनीय है। इन कवियों ने मुक्तक छंद और रितु कांत दोनों प्रकार की कविताएं लिखी है। इसमें प्राचीन छंदों के सांसद नवीन छंदों के निर्माण की प्रवृत्ति भी मिलती है।

छायावाद के प्रमुख कवियों के नाम

कवि	रचनाएं
जयशंकर प्रसाद	कामायनी आंसू लहर झरना
सुमित्रानंदन पंत	पल्लव वीरा गुंजन लोकायतन
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	अनामिका परिमल गीतिका
महादेवी वर्मा	नेहा रश्मि नीरजा सांध्य गीत

छायावाद की चार विशेषताएं लिखिए
1-छायावादी काव्य में रहस्व चिंतन की प्रधानता है।
2-इसमें संवेदनशीलता का अधिक उत्कृष्ट प्रेम की अनुभूति है।
3-प्रकृति में मानवीकरण का आरोप।
4-भाषा संस्कृति के तत्सम शब्दों से युक्त खड़ी बोली है जिसमें माधव और कोमलता का प्राचुर्य है।
5-छायावाद में अध्यात्मिकता भाव विकसित हुआ है।[11]

- रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य का इतिहास में लिखा है कि- "संवत् १९७० के आसपास मैथिलीशरण गुप्त, मुकुटधर पांडेय आदि कवि खड़ीबोली काव्य को अधिक कल्पनामय, चित्रमय और अंतर्भाव व्यंजक रूप-रंग देने में प्रवृत्त हुए।[4] यह स्वच्छन्द और नूतन पद्धति अपना रास्ता निकाल रही थी कि रवीन्द्रनाथ की रहस्यात्मक कविताओं की धूम हुई। और कई कवि एक साथ रहस्यवाद और प्रतीकवाद अथवा चित्रभाषावाद को ही एकांत ध्येय बनाकर चल पड़े। चित्रभाषा या अभिव्यंजन पद्धति पर ही जब लक्ष्य टिक गया तब उसके प्रदर्शन के लिए लौकिक या अलौकिक प्रेम का क्षेत्र ही बाकी समझा गया। इस बँधे हुए क्षेत्र के भीतर चलनेवाले काव्य ने छायावाद नाम ग्रहण किया।

छायावादी शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिये। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ उसका संबंध काव्य-वस्तु से होता है अर्थात् जहाँ कवि उस अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलंबन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम का अनेक प्रकार से व्यंजन करता है। इस अर्थ का दूसरा प्रयोग काव्य-शैली या पद्धति-विशेष के व्यापक अर्थ में होता है' छायावाद का सामान्यतः अर्थ हुआ प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करनेवाली छाया के रूप में अप्रस्तुत का कथन। छायावाद का चलन द्विवेदी काल की रूखी इतिवृत्तात्मक (कथात्मकता) की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ था। जैसे, "धूल की ढेरी में अनजाने, छिपे हैं मेरे मधुमय गान।""[12]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

- नंददुलारे वाजपेयी ने लिखा है कि- "प्रकृति के सूक्ष्म किन्तु व्यक्त सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या होनी चाहिए।'
- हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य का उन्द्भव और विकास में लिखा है कि- "द्वितीय महायुद्ध के समाप्त होते सारे देश में नई चेतना की लहर दौड़ गई। सन् १९२९ में महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतवर्ष विदेशी गुलामी को झाड़-फेंकने के लिए कटिबद्ध हो गया। इसे सिर्फ राजनीति तक ही सीमित नहीं समझना चाहिये। यह संपूर्ण देश का आत्म स्वरूप समझने का प्रयत्न था और अपनी गलतियों को सुधार कर संसार की समृद्ध जातियों की प्रति- द्वंद्विता में अग्रसर होने का संकल्प था। संक्षेप में, यह एक महान सांस्कृतिक आंदोलन था। चित्तगत उन्मुखता इस कविता का प्रधान उद्गम थी और बदलते हुए मानो के प्रति दृढ आस्था इसका प्रधान सम्बल। इस श्रेणी के कवि ग्राहिकाशक्ति से बहुत अधिक संपन्न थे और सामाजिक विषमता और असामंजस्यों के प्रति अत्यधिक सजग थे। शैली की दृष्टि से भी ये पहले के कवियों से एकदम भिन्न थे। इनकी रचना मुख्यतः विषयि प्रधान थी। सन् 1920 की खड़ीबोली कविता में विषयवस्तु की प्रधानता बनी हुई थी। परंतु इसके बाद की कविता में कवि के अपने राग-विराग की प्रधानता हो गई। विषय अपने आप में कैसा है ? यह मुख्य बात नहीं थी। बल्कि मुख्य बात यह रह गई थी कि विषयी (कवि) के चित्त के राग-विराग से अनुरंजित होने के बाद विषय कैसा दीखता है ? परिणाम विषय इसमें गौण हो गया और कवि प्रमुख।"
- नगेन्द्र ने लिखा है कि- "1920 के आसपास, युग की उद्बुद्ध चेतना ने बाह्य अभिव्यक्ति से निराश होकर, जो आत्मबद्ध अंतर्मुखी साधना आरंभ की, वह काव्य में छायावाद के रूप में अभिव्यक्त हुई।"
- नामवर सिंह ने छायावाद में लिखा है कि- "छायावाद शब्द का अर्थ चाहे जो हो, परंतु व्यावहारिक दृष्टि से यह प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी की उन समस्त कविताओं का द्योतक है, जो १९१८ से ३६ ई. के बीच लिखी गईं।' वे आगे लिखते हैं- 'छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति चाहता था और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से।"[13]

परिणाम

'द्विवेदी युग' के पश्चात हिन्दी साहित्य में कविता की जो धारा प्रवाहित हुई, वह छायावादी कविता के नाम से प्रसिद्ध हुई। 'छायावाद' की कालावधि सन 1917 से 1936 तक मानी गई है। 1916 ई. के आस-पास हिन्दी में कल्पनापूर्ण, स्वच्छंद और भावुकता की एक लहर उमड़ पड़ी। भाषा, भाव, शैली, छंद, अलंकार इन सब दृष्टियों से पुरानी कविता से इसका कोई मेल नहीं था। आलोचकों ने इसे 'छायावाद' या 'छायावादी कविता' का नाम दिया। 'द्विवेदी युग' में हिन्दी कविता कोरी उपदेश मात्र बन गई थी। उसमें समाज सुधार की चर्चा व्यापक रूप से की जाती थी और कुछ आख्यानों का वर्णन किया जाता था। उपदेशात्मकता और नैतिकता की प्रधानता के कारण कविता में नीरसता आ गई। कवि का हृदय उस निरसता से ऊब गया और कविता में सरसता लाने के लिए वह छटपटा उठा। इस युग की हिन्दी कविता में वस्तु निरूपण के स्थान पर अनुभूति निरूपण को प्रधानता प्राप्त हुई थी।[14]

छायावाद का स्वरूप और काव्य परंपरा

हिंदी की स्वच्छन्दतावादी काव्यधारा की विकसित अवस्था को छायावाद नाम से अभिहित किया गया है । इस आधार पर देखा जाय तो श्रीधर पाठक, मुकुटधर पाण्डेय और रामनरेश त्रिपाठी, जिन्हें आचार्य शुक्ल 'सच्चे स्वच्छन्दतावादी' कहते थे, प्रथम चरण के कवि है और दूसरे चरण इस काव्य-प्रवृति को अधिक सूक्ष्म और व्यापक रूप देकर प्रौढ़तम उत्कर्ष तक पहुँचाने वाले कवि जयशंकर प्रसाद, निराला, पन्त और महादेवी वर्मा थे, जिन्हें छायावादी कवि माना गया । 'छायावाद' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम मुकुटधर पाण्डेय ने किया । उन्होंने 1920 में जबलपुर से प्रकाशित पत्रिका "श्रीशारदा" में "हिंदी कविता में छायावाद" नाम से एक लेखमाला प्रकाशित की । उन्होंने छायावाद की आरंभिक विशिष्टताओं का उल्लेख करते हुए लिखा कि "छायावाद एक मायामय सूक्ष्म वस्तु है। इसमें शब्द और अर्थ का सामंजस्य बहुत कम रहता है ।" किन्तु आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने यह अनुमान लगा लिया कि छायावाद और रहस्यवाद बंगाल के ब्रह्म-समाजी छायापदों और रवीन्द्रनाथ टैगोर की रहस्यानुभूतियों का रूपांतरण है और जिसका आधार ईसाई धर्म-प्रचारकों का रहस्य-दर्शन अर्थात् फैंटसमाटा है। कुछ समय के बाद छायावाद के लिए "रोमैंटिसिज्म" शब्द का प्रयोग किया गया । कवि और आलोचकों ने छायावाद और रोमैंटिसिज्म को पर्याय समझना शुरू किया । आचार्य शुक्ल ने छायावाद को एक शैली मात्र घोषित कर दिया । किन्तु रहस्यवाद, छायावाद और स्वच्छन्दतावाद (रोमैंटिसिज्म) में सूक्ष्म अंतर है। लेकिन आचार्य शुक्ल के इस मत को उनके प्रिय कवि सुमित्रानंदन पन्त ने यह कहकर अमान्य कर दिया कि रहस्योन्मुखता छायावाद की एक महत्वपूर्ण विशेषता अवश्य है, उसका केंद्रीय भाव नहीं है । छायावाद वस्तुतः एक विशेष सौन्दर्य दृष्टि का उन्मेष है । रहस्योन्मुखता और प्रकृति प्रेम उसी की अभिव्यक्ति की विविध सरणियाँ है ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

जहाँ तक छायावाद को एक शैली मात्र मानने की बात है तो प्रतीकात्मकता को छायावाद का अनिवार्य लक्षण पहले ही मान लिया गया है । मूल रूप से यथार्थ को छाया के माध्यम से व्यक्त करने वाले काव्यान्दोलन को छायावाद कहा जाता है |द्विवेदी युगीन बंधन प्रियता और आदर्शवादिता को विरोध करते हुए छायावादी रचनाकारों ने युग के यथार्थ के बाह्य स्वरूप को ना व्यक्त करके उसकी सूक्ष्मता को व्यक्त करने पर अत्यधिक जोर दिया। छायावादी कविता गहरे अर्थों में कल्पना तत्व, सांस्कृतिक चेतना का विकास, राष्ट्रवादी चेतना का विस्तार, नवजागरण के सूक्ष्म होते स्तर और आधुनिकता बोध की कविता है । छायावादी कवियों ने अपनी व्यक्तिगत जीवन की अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से की है। इन्होंने विषय वस्तु की खोज बाह्य जगत से ना करके अपने मन के साथ संवाद को अभिव्यक्त किया है। छायावाद विदेशी पराधीनता और स्वदेशी जीर्ण-शीर्ण रुढियों से मुक्त होने का मुखर स्वर भी है, जिसमें राष्ट्रीय जागरण की चेतना प्रधान है ।[15]

सांस्कृतिक चेतना का विकास छायावाद की एक प्रमुख विशेषता के रूप में सामने आती है। कोई भी समाज जब आधुनिकता के संपर्क में आता है तो वह सबसे पहले अपने इतिहास के साथ संवाद स्थापित करता है। साथ ही उन सभी तत्वों को अलगाने का कार्य करता है जो उनकी सांस्कृतिक परंपरा को मजबूत करते हैं। इसक्रम में छायावादियों के पास एक लंबी परंपरा मौजूद है जिसके बरक्स वह तत्कालीन समाज के सामने उनके गौरवशाली इतिहास को ला सकते थे। छायावाद काव्य को एकतरफ गांधीवाद से प्रेरणा प्राप्त हुयी और दूसरी तरफ वह बंगाल के नवजागरण तथा रवीन्द्रनाथ के संपर्क में भी आता है। छायावाद की राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना गांधी की भाववादी विचारधारा तथा रवीन्द्रनाथ का मानवतावाद से प्रेरणा लेकर विकसित हो रही थी।

छायावादी काव्य परंपरा

छायावादी काव्य धारा के प्रवर्तक कवि जयशंकर प्रसाद है। केवल भाषा और विषय वस्तु ही नहीं, प्रसाद ने नवीन जीवन-दृष्टि की भी सृष्टि की |

प्रसाद काव्य की सांस्कृतिक चेतना अत्यधिक प्रभावशाली है साथ ही यह उनके काव्य की प्रमुख विशेषता भी है। प्रसाद काव्य की सांस्कृतिक चेतना पर व्यापक राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना तथा विश्वमंगल की कामना का समावेश देखा जा सकता है। नवजागरण के प्रभाव में भारतीय समाज में जो संवेदना विकसित हो रही थी वह अपने इतिहास और संस्कृति से गहराई से प्रभावित थी। इसके अलावा जो आधुनिक संवेदना विकसित हो रही थी उसमें भी परंपरा और इतिहास को अत्यधिक महत्व दिया गया था। प्रसाद की कविता इसी तरह की सांस्कृतिक चेतना और आधुनिकताबोध को लेकर विकसित हुई थी |इसके अलावा भाषा के विशेष संदर्भ में देखने पर पता चलता है कि प्रसाद की कविता ब्रजभाषा से लेकर खड़ीबोली तक का सफर तय करती है। इतिवृत्तात्मक खड़ी बोली से लेकर रचनात्मक संवेदना संपन्न लाक्षणिक, चित्रमय, ध्वनिमय काव्य भाषा इनके काव्य की प्रमुख विशेषता है।[14]

निराला छायावादी युग के सबसे प्रखर रचनाकार माने जाते हैं । अधिकांश छायावादी रचनाकारों में कल्पना, सामाजिकता और संस्कृति का गहरा मिश्रण दिखाई देता है। निराला इसी परंपरा का निर्वहन अपनी अलग शैली में करते हैं। शुरू से इनकी कविताएं अत्यधिक प्रयोगधर्मी रही हैं। स्वानुभूति की जो संवेदना आजादी के बाद के गद्य साहित्य में दिखाई देती है निराला उसे अपनी कविता के माध्यम से छायावादी युग में अभिव्यक्त कर चुके हैं। सरोज स्मृति उनकी एक ऐसी ही कविता है जिसके माध्यम से उन्होंने अपनी पुत्री के जीवन के संदर्भ में अपने कविता के माध्यम से व्यक्त किया है। इसके अलावा उन्होंने कई ऐसी कविताएं लिखी हैं जिसका संदर्भ उनके स्वयं के जीवन से लिया जा सकता है। इनकी कविता का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष समकालीनता है। लगातार समाज में विकसित विचारधारा के प्रभाव में अपनी पक्षधरता को निर्धारित करती है। इन्होंने रचनाओं को छंद के बंधन से मुक्त किया। इसतरह निराला छायावाद के सबसे अधिक प्रयोगवादी कवि हैं। तुलसीदास कविता के बाद इनकी कविताओं की संवेदना लगातार प्रगतिवाद के साथ जुड़ती जाती है। इसक्रम में कुकुरमुत्ता, बेला, नये पत्ते, तथा अणिमा आदि महत्वपूर्ण है।

महादेवी अपने समय में अकेली महिला लेखिका हैं जो उस दौर में औरतों की संवेदना को छायावादी संवेदना के साथ व्यक्त करती हैं। इनके काव्य में प्रमुख रूप से वैयक्तिक्ता, वेदना और निराशा, वैयक्तिक प्रेम का चित्रण, अनुभूतियों का मार्मिक चित्रण तथा कल्पना का प्राचुर्य दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त दुःख की गहन अनुभूति तथा अकेलापन, रहस्यवादी प्रवृत्ति और प्रकृति चित्रण को भी ये प्रमुखता देती हैं। यदि देखा जाए तो छायावादी युग राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आधार पर अत्यधिक उथल पुथल का युग रहा है। महादेवी की रचनाएं उस युग के यथार्थ से लगातार प्रभावित दिखाई देती हैं लेकिन उनकी प्रवृत्ति प्रायः अंतर्मुखी रही है। इन्होंने अपनी कविताओं में व्यथा वेदना और रहस्य भावना को ही प्रमुखता दी है तथा आध्यात्मिकता का वरण किया है। नीहार, रश्मि, नीरजा, दीपशिखा तथा सांध्यगीत उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं ।[13]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

छायावादी युग के प्रवर्तकों में सुमित्रानंदन पंत का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। इनकी कविता में ना सिर्फ छायावादी प्रवृत्ति वरन् अपने समय में विकसित विचारधाराओं का वरण दिखाई देता है। उनकी काव्य रचना में प्रारंभ से लेकर अंत तक अनेक परिवर्तन और मोड़ दिखाई देते हैं। यह एक ऐसे कवि हैं जिनकी मान्यताएं, आदर्श और विचार समय के अनुसार बदलती रही हैं। आजीवन वह किसी आदर्श और विचार से बंधकर नहीं रहे। कवि की विचारधारा ने धीरे – धीरे प्रगतिवाद की तरफ अपना रूख किया। यहीं से उनकी कविता के विकास का द्वितीय युग माना जा सकता है। इस युग तक आते आते छायावाद का सौंदर्यवादी कवि मानव मात्र के कल्याण की कल्पना करता है। कवि को यह विश्वास हो चला था कि मानवता का कल्याण पुरातनता के निर्मोह को उतार फेंकने में है।

छायावादी काव्य का वैशिष्ट्य

छायावाद कविता का ऐसा आन्दोलन है जिसका संबंध भाव-जगत से है, हृदय की भूमि से है । भावलोक की सता ही अनुभव का विषय है, हृदय से जानने, समझने और महसूस करने की वस्तु है । हिंदी साहित्य में आधुनिक कविता का इतिहास देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि पहली बार छायावाद को ही विराट मानवीय वेदना की भूमि पर प्रतिष्ठित होने का श्रेय प्राप्त है । इसकी प्रमुख विशिष्टताएँ इसप्रकार है-

व्यक्ति-स्वातंत्र्य को स्वर

व्यक्ति-स्वातंत्र्य छायावादी काव्य का मूल स्वर है । यह व्यक्ति की मानसिक और सामाजिक स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति है । किन्तु व्यक्ति-स्वातंत्र्य को अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए भी विश्व-बोध में उसका विलयन कर देना ही छायावाद की अन्यतम उपलब्धि है । निराला जब यह कहते है कि "मैंने मै शैली अपनाई" तो यहाँ मैं कहकर समूचे युग की पीड़ा को वे अपनी निधि मानकर चलते है । प्रसाद भी "आँसू" में इसीप्रकार वैयक्तिक विरह को "विश्व-वेदना" में परिणत करते हैं । व्यक्तिगत सुख-दु:ख की अपेक्षा अपने से अन्य के सुख-दुख की अनूभूति ने ही नए कवियों के भाव-प्रवण और कल्पनाशील हृदयों को स्वच्छंदतावाद की ओर प्रवृत्त किया।निराला ने "सरोज-स्मृति" तथा "वन-वेला" में अपने जीवन के मार्मिक प्रसंगों का चित्रण करके वैयक्तिकता का आग्रह व्यक्त किया है । यह आकस्मिक नहीं है कि छायावादी कवियों में से अधिकांश ने किसी-न-किसी रूप में आत्मकथात्मक कविताएँ अवश्य लिखीं है ।[12]

प्रकृति-सौंदर्य और प्रेम की व्यंजना

छायावादी कवि का मन प्रकृति चित्रण में खूब रमा है और प्रकृति के सौंदर्य और प्रेम की व्यंजना छायावादी कविता की एक प्रमुख विशेषता रही है। छायावादी कवियों के लिए प्रकृति देश-प्रेम और व्यक्ति-स्वातंत्र्य की आकांक्षा की पूरक रही है । इन कवियों ने प्रकृति को "सर्व सुंदरी" कहा है । प्रसाद जी ने हिमालयी शिखरों को शोभनतन कहा है । पंत स्वयमेव पर्वत पुत्र हैं । जबकि निराला के यहाँ सागर, सरिता, निर्झर तथा जल-प्रवाह की ध्वनयात्मक व्यंजना बहुत हुई है । 'बादल राग', 'प्रभात के प्रति' और धारा आदि कविताएँ इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है । छायावादी काव्य में प्रकृति-सौंदर्य के अनेक चित्रण मिलते हैं। प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी आदि छायावाद के सभी प्रमुख कवियों ने प्रकृति का नारी रूप में चित्रण किया और सौंदर्य व प्रेम की अभिव्यक्ति की। जैसे-पंत की कविता -

"बांसों का झुरमुट
संध्या का झुटपुट
हैं चहक रहीं चिड़ियां
टी वी टी टुट् टुट्"

छायावादी कवि के लिए प्रकृति की प्रत्येक छवि विस्मयोत्पादक बन जाती है। वह प्राकृतिक सौंदर्य पर विमुग्ध होकर रहस्यात्मकता की ओर उन्मुख हो जाता है।[11]

रुढियों से मुक्ति का काव्य

छायावादी काव्य रुढियों से विद्रोह का काव्य है । इन कवियों ने सर्वप्रथम पौराणिकता का निषेध किया । निराला ने हर तरह की रूढ़ि पर प्रहार करने में अपने समकालीनों में सबसे आगे थे । वे काव्य में निरंतर नवगति, नवलय, ताल छंद नव, नवल कंठ, नवजलद मंद्र नव के अभिलाषी रहे है । पन्त ने घोषणा की कि "कट गए छंद के बंध, प्रास के रजत पाश" ।प्रसाद को भी "पुरातनता का निर्मोक" सह्य नहीं है ।

राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना

छायावाद का केन्द्रीय मूल्य स्वातंत्र्य ही है । इसी से छायावादी काव्य के जीवन और कविता संबंधी सभी मूल्य निःसृत होते है । छायावादी कवि अपने ऐतिहासिक सन्दर्भ और राष्ट्रीय परिवेश के अनुरूप बहुमुखी स्वातंत्र्य अथवा मुक्ति की आकांक्षा की अभिव्यक्ति था । मुक्ति की कामना से प्रेरित होकर छायावादी कवियों ने ओजस्वी स्वर में जागरण-गीत भी लिखा । प्रसाद की "हिमालय के आँगन में उसे, प्रथम किरणों का दे उपहार' और 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

भारती' जैसे गीत, निराला की 'भारत जय विजय करे' जैसी रचनाएँ इसका प्रमाण हैं । निराला के "बादल-राग" का विप्लवी बादल भी इसी मुक्ति की कामना का उदाहरण है । छायावाद की मुक्ति कामना और राष्ट्रीय चेतना केवल राष्ट्रगीतों तक ही सीमित नहीं है बल्कि अपनी सूक्ष्म और सांकेतिक प्रकृति के अनुरूप अन्य कविताओं में भी अंतर्धारा के रूप में व्याप्त रहती है । निराला के "तुलसीदास" में देश को पराधीनता से मुक्त कराने का संकल्प है और "राम की शक्ति पूजा" के पौराणिक प्रतीक भी देश के उद्धार के लिए नैतिक शक्ति की साधना का सन्देश देते है । [10]

राष्ट्रीय जागरण की गोद में पलने-पनपने वाला छायावाद साहित्य यदि रहस्यात्मकता और राष्ट्र प्रेम की भावनाओं को साथ-साथ लेकर चला है, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। विदेशी गुलामी से मुक्ति के लिए संघर्ष कर रही भारतीय जनता को देश के अतीत और सांस्कृतिक चेतना से अवगत कराने के लिए जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटकों में राष्ट्र का क्रमबद्ध इतिहास प्रस्तुत किया । प्रसाद ने अपने एक गीत-"हिमालय के आँगन में जिसे प्रथम किरणों का दे उपहार" में भारत के हजारों वर्षों का स्वर्णिम इतिहास अंकित कर दिया है । निराला का प्रसिद्ध गीत-"भारत जय विजय करे" और पंत की "भारतमाता ग्रामवासिनी" भी राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं । प्रसाद जी द्वारा कामायनी में शक्ति के विद्युत्कणों को समेटने और निराला द्वारा 'राम की शक्ति पूजा' में शक्ति की मौलिक कल्पना करने का आह्वान देश की जनता को अपने भीतर की शक्ति को पहचानने का आह्वान है ।

नारी के प्रति गरिमामयी दृष्टि

छायावादी कवियों में नारी के प्रति भक्तिकालीन कवियों की तरह न तो तिरस्कार भाव है और न रीतिकाव्य जैसा कामुक कदाचार । इन्होने द्विवेदी युगीन परहेजी संस्कारी से ऊपर उठाकर मानवीय सौन्दर्य की अधिष्ठात्री, मानवीय करुणा की विधात्री और जीवन के शुभ संकेतों की निर्मात्री घोषित किया है । प्रसाद के अनुसार नारी श्रद्धा रूप है-

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पगतल में,
पीयूष स्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में"

छायावादी कवियों की दृष्टि में नारी विलास की सहचरी न होकर उच्चभूमियों तक ले चलने वाली शक्ति है । [9]

स्वच्छंद कल्पनाशीलता

छायावादी कविता का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष कल्पना का नवोन्मेष है । प्रसाद का कल्पना विधान अत्यंत विलक्षण है । कामायनी में श्रद्धा की मुख छवि को प्रसाद ने घटाओं के बीच खिले गुलाबी रंग के बिजली के फूल जैसी प्रतीत होती है । इसीप्रकार हिमालयी प्रकृति को श्वेत कमल कहना और और उसपर प्रतिबिंबित अरुणिमा को "मधुमय पिंग पराग" कहना विलक्षण कल्पना विधान है । इसीप्रकार निराला की बिंबविधायिनी कल्पना उनकी कई कविताओं-"राम की शक्ति पूजा", "सरोज स्मृति", और तुलसीदास" में उद्भाषित हुई है । पन्त तो "कोमल कल्पनाओं के राजकुमार" कहे जाते रहे हैं ।

काव्यभाषा और काव्य रूप

छायावादी कवियों ने काव्य-भाषा को सर्वाधिक प्राथमिकता दी है । प्रसाद के अनुसार काव्य के सौन्दर्य बोध का मुख्य आधार है-शब्द-विन्यास कौशल । निराला ने काव्य के भावात्मक शब्दों को ध्वनि और शब्द व्यापार कहा है । वे कहते है-" एक-एक शब्द बंधा ध्वनिमय साकार" । केवल चित्रात्मक भाषा के कारण हिंदी वाङ्मय में छायावादी काव्य को स्वतंत्र काव्य धारा माना जा सकता है। कविता के लिए चित्रात्मक भाषा की अपेक्षा की जाती है और इसी गुण के कारण उसमें बिम्बग्राहिता आती है। छायावादी कवि इस कला में परम विदग्ध हैं। प्रसाद की निम्नांकित पंक्तियों में भाषा की चित्रात्मकता की छटा देखते ही बनती है-

शशि मुख पर घूंघट डाले,अंचल में दीप छिपाए।
जीवन की गोधूलि में, कौतूहल से तुम आए।

छायावादी कवि ने परम्परा-प्राप्त उपमानों से संतुष्ट न होकर नवीन उपमानों की उद्भावना की। इसमें अप्रस्तुत-विधान और अभिव्यंजना-शैली में शतश: नवीन प्रयोग किए। मूर्त में अमूर्त का विधान उसकी कला का विशेष अंग बना।[8]

छायावादी कवियों ने मुक्तक काव्य, गीति काव्य, प्रबंध काव्य, लम्बी कविताएँ और नाट्य काव्य की रचना की। इनमें मुक्तक काव्य सर्वाधिक लोकप्रिय रहा है । प्रबंध काव्यों में 'कामायनी', प्रेम-पथिक', लोकायतन' और तुलसीदास उल्लेखनीय हैं ।

छायावाद की छंद योजना वैविध्यपूर्ण है । निराला ने पहलीबार मुक्त छंद का प्रयोग करके कविता को तुकबंदी से मुक्त किया । इन कवियों ने लोकधुनों में अपने छंदों का बांधा है । प्रसाद ने कामायनी के प्रथम सर्ग में लोक प्रचलित आल्हा छंद का प्रयोग किया है । इन छन्दों में ध्वन्यात्मकता का सफल निर्वाह हुआ है ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

हिंदी कविता को छायावाद की देन

हिंदी साहित्य के लंबे इतिहास में छायावाद बीस बर्षों तक चलने वाला आंदोलन था, जो साहित्य के विकास की दृष्टि से यह समय बहुत कम है लेकिन इसका प्रभाव बहुत लंबे समय तक रहा। कल्पनाशीलता के बीच जन्मे इस काव्यांदोलन में व्याप्त जीवन मूल्यों, जीजिविषा तथा जीवटता हिंदी साहित्य को अमूल्य देन है क्योंकि इसीकारण यह आंदोलन बाद में प्रगतिवाद के मार्ग को प्रशस्त करता है । जीवन और समाज के प्रति जिस क्रान्तिकारी प्रवृति का विकास प्रगतिवादी और समकालीन कविता के दौर में हुआ उसका उत्स छायावाद ही है। इसतरह यदि देखा जाए तो छायावाद और प्रगतिवाद एक दूसरे की प्रतिक्रिया में नहीं वरन् एक दूसरे की पूरक बनकर विकसित हुई है। सामाजिक विकास की एक विशेष अवस्था में छायावाद प्रवृत्ति का क्षरण और प्रगतिवाद का विकास आवश्यक था। छायावाद ने आधुनिक काल के बदले हुए परिवेश को देखने की दृष्टि हिंदी काव्य जगत को प्रदान की । वर्तमान समय में जब अस्मिता के प्रश्न अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गये हैं। भाषा, जाति, वर्ग और संप्रदाय में विभाजित समाज का चित्र हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। इन सब के प्रकाश में छायावादी सामूहिकता का साहित्य बनकर उभरता है जहाँ भावनाएं, संस्कार और समस्याओं का सामूहीकरण करके उसके समाधान को तलाशने की कोशिश दिखाई देती है। खासतौर पर प्रसाद के काव्य में जिसतरह लोकजीवन की प्रतिष्ठा और एक हारे हुए नायक में जीवन जीने की लालसा का प्रयास दिखाई देता है वह अद्वितीय है। इसलिए कामायनी को कालजयी रचनाओं के अंतर्गत स्थान दिया जाता है। निराला की कविता राम की शक्तिपूजा में भी ऐसी संवेदना का विकास दिखाई देता है। जहाँ राम एक सामान्य मनुष्य की भांति शक्ति की अराधना और मौलिक कल्पना करते दिखाई देते हैं।[7]

वैयक्तिक अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने की क्षमता छायावाद की ही देन है । छायावादी कवि व्यक्तिगत सुख-दु:ख की अपेक्षा अपने से अन्य के सुख-दुख की अनूभूति को महत्व देते थे । हजारी प्रसाद द्विवेदी और शिवदान सिंह चौहान छायावादी वैयक्तिकता को उच्च भूमि पर प्रतिष्ठित किया क्योंकि यह प्रवृति सामाजिक चेतना के विरोध में नहीं, बल्कि सामंती रूढ़ियों के विरोध में खड़ी हुई थी, जिसे आगे के रचनाकारों ने सहर्ष स्वीकार किया । हिंदी कविता में आगे चलकर मुक्त छंद की जिस प्रवृति का विकास हुआ, उसकी शुरुआत छायावाद से ही हुई । निराला ने पहली बार मुक्त छंद का प्रयोग करके कविता को तुकबंदी से मुक्त किया । छायावाद ने नवीन सौन्दर्य चेतना, नवीन कल्पना, नवीन भाषा विधान और नवीन अप्रस्तुत विधान के द्वारा हिंदी कविता को खूब समृद्ध किया ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि छायावादी काव्य आन्दोलन हिंदी काव्य की एक अन्यतम उपलब्धि है । आधुनिक हिंदी काव्य आन्दोलन में यही एक आन्दोलन है जिसे मौलिक काव्य आन्दोलन कहा जा सकता है । यह आन्दोलन एक ओर भारतीय संस्कृति और औपनिषदिक तत्वों को आधुनिक धरातल पर जागृत करने का सफल प्रयास करता है तो दूसरी ओर आगामी प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नयी कविता आंदोलनों का मार्ग भी प्रशस्त करता है ।

छायावाद की पाँच विशेषताएँ निम्न हैं-

(i) वैयक्तिकता .छायावादी काव्य रचना में काव्य का नायक खुद कवि होता है । कवि हर्ष, विषाद, प्रेम, दुख-सुख खुद पर आरोपित करता है । पंत, निराला, महादेवी वर्मा इसी धारा के कवि थे। इनकी वैयक्तिकता आत्मकेन्द्रित होकर भी व्यापक होता है ।

(ii) देशप्रेम : छायावादी कवि अपने काव्य में देशप्रेम को भी दर्शाया है। पर्यावरणीय संकट से मुक्ति एवं प्राकृतिक विपदाओं से पीड़ितजन देश के लिए इन कवियों के काव्य में निहित है। वे इस धरती को शांतिमय और खुशहाल देखना चाहते हैं ।

"जिसका चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है
जिसका मुकुट हिमालय वह देश कौन सा है?
उपरोक्त पंक्तियाँ से देश प्रेम की सुगन्ध आ रही है।

(iii) प्रकृति-प्रेम : छायावादी कवि प्रकृति प्रेमी हैं । वे प्रकृति की सत्ता को स्थापित करना चाहते हैं । प्रकृति का रहस्य उनमें भय नहीं आकर्षण पैदा करता है । प्रकृति उनके व्यक्तित्व का खुला एवं स्वच्छंद वातावरण देती है ।

"प्रथम रश्मि का आना रभिणी, तूने कैसे पहचाना ।"
जीर्ण बाहु है, शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक आधार,
ऐ विप्लव के वीर ।[6]

(iv) नारी भावना : छायावादी कवियों में नारी के प्रति श्रद्धा, संवेदना, उनकी स्वतंत्रता के साथ लोकतांत्रिक बोध की संपन्नता भी है।
तुम भूल गए पुरुषत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की ।
समरसता है संबंध बनी, अधिकार और अधिकारी की।

(v) सौन्दर्य का चित्रण एवं प्रेम की अभिव्यक्ति : छायावादी कवियों में छंद गठन अभूतपूर्व है। इनकी शब्द योजना में अधिक प्रगाढ़ता,

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

मधुमयता, नाट्युक्त अतुलनीय विविधता सन्धि, समास, विविध जाति एवं ध्वनि वाले शब्दों का प्रयोग है । अनुप्रास युक्त संगीतमयी, कविताएँ पठनीय है। आध्यात्मिक विश्वास, कर्मवाद की प्रखरता से पूर्ण कविताएँ ।
जयशंकर प्रसाद ने लिखा कि- "काव्य के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुंदरी के बाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिंदी में उसे छायावाद नाम से अभिहित किया गया।" वे यह भी कहते हैं कि- "छायावादी कविता भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर अधिक निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौंदर्य, प्रकृति-विधान तथा उपचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृत्ति छायावाद की विशेषताएँ हैं।"
सुमित्रानंदन पंत छायावाद को पाश्चात्य साहित्य के रोमांटिसिज्म से प्रभावित मानते हैं।
महादेवी वर्मा छायावाद का मूल दर्शन सर्वात्मवाद को मानती हैं और प्रकृति को उसका साधन। उनके छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस संबंध में प्राण डाल दिए जो प्राचीन काल से बिम्ब-प्रतिबिम्ब के रूप में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को प्रकृति अपने दुख में उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी।' इस प्रकार महादेवी के अनुसार छायावाद की कविता हमारा प्रकृति के साथ रागात्मक संबंध स्थापित कराके हमारे हृदय में व्यापक भावानुभूति उत्पन्न करती है और हम समस्त विश्व के उपकरणों से एकात्म भाव संबंध जोड़ लेते हैं। वे रहस्यवाद को छायावाद का दूसरा सोपान मानती हैं।[5]

निष्कर्ष

द्विवेदी युग के अंतिम चरण में स्वच्छन्दतावाद की धारा वेगवती होती चली गयी थी. यों तो स्वच्छन्दतावाद की चर्चा श्रीधर पाठक की रचनाओं को देखकर होने लगी थी किन्तु मुकुटधर पाण्डेय, मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद और पन्त ने भी अपनी कविता में यत्र-तत्र नये भाव और नवीन अभिव्यंजना शैली को स्थान देना प्रारम्भ कर दिया था. उन रचनाओं को प्रारम्भ में रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताओं के सादृश्य में आध्यात्मिक रहस्यवाद के ढांचे में एक नया नाम छायावाद दे दिया गया. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस वाद को मन से स्वीकार नहीं किया. उन्होंने छायावाद शब्द का प्रयोग बंगाल के तत्कालीन नये कवियों की कविता के सन्दर्भ में किया. शुक्लजी लिखते हैं[11] ' 'छायावाद नाम चल पड़ने का परिणाम यह हुआ कि बहुत से कवि रहस्यात्मकता, अभिव्यंजना के लाक्षणिक वैचित्र्य, वस्तु विन्यास की विश्रृंखलता, चित्रमयी भाषा और मधुमती कल्पना को ही साध्य मानकर चले. शैली का इन विशेषताओं की दूरारूढ़ साधना में ही लीन हो जाने के कारण अर्थभूमि के विस्तार की ओर उनकी दृष्टि न रही.''स्वाधीनता ने लोगों की पहली दौड़ तो बंग-भाषा की रहस्यात्मक कविताओं के सजीले और कोमल मार्ग पर हुई. पर उन कविताओं की बहुत कुछ गतिविधि अंग्रेजी वाक्य खण्डों के अनुवाद द्वारा संगठित देख, अंग्रजी काव्यों से परिचित हिन्दी कवि सीधे अंग्रेजी से ही तरह-तरह के लाक्षणिक प्रयोग लेकर अपनी रचनाओं में जड़ने लगे. कनक प्रभात, विचारों में बच्चों की सांस, स्वर्ण समय, प्रथम मधुमास, स्वप्निल कान्ति ऐसे प्रयोग उनकी रचनाओं के भीतर इधर-उधर मिलने लगे. केवल भाषा के प्रयोग वैचित्र्य तक ही बात न रही, अनेक यूरोपीय वादों और प्रवादों का प्रभाव भी छायावाद कही जानेवाली कविताओं के स्वरूप पर कुछ-न-कुछ पड़ता रहा. ' 'छायावादी कविता पर दूसरा प्रभाव यह देखने में आया कि अभिव्यंजना प्रणाली या शैली की विचित्रता ही सब कुछ समझी गयी. नाना अर्थभूमियों पर काव्य का प्रसार रुक-सागया.''[12]

(रामचन्द्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 623-624)

रामचन्द्र शुक्ल के छायावाद विषयक मन्तव्यों में यह भी है कि पुराने ईसाई सन्तों के छायाभास तथा यूरोपीय काव्य क्षेत्र में प्रवर्तित आध्यात्मिक प्रतीकवाद (सिंबॉलिज्म) के अनुकरण पर रची जाने के कारण बंगाल में ऐसी कविताओं को छायावाद कहा जाने लगा था. अतः हिन्दी में भी इस तरह की कविताओं का छायावाद चल पड़ा (हिन्दी सा.इ.,पृ. 615). आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने शुक्लजी के इस मत को स्वीकार नहीं किया और अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखा कि बंगाल में छायावाद नाम कभी चला ही नहीं. श्री शारदा पत्रिका में मुकुटधर पाण्डेय का हिन्दी में 'छायावाद' शीर्षक निबन्ध चार अंकों में प्रकाशित हुआ था. उस निबन्ध में उन्होंने छायावाद पर अच्छा प्रकाश डाला था. हिन्दी में छायावाद शब्द का जो व्यापक अर्थ हुआ, प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करनेवाली छाया के रूप में अप्रस्तुत का कथन. इस प्रकार रामचंद्र शुक्ल स्वच्छन्दतावाद को छायावाद से भिन्न और रहस्यवाद को छायावाद का पर्यायवाची अथवा उसी में अन्तर्भुक्त मानते हैं. प्रारंभिक काल के आलोचकों का ध्यान इस ओर नहीं गया कि विषयवस्तु और अभिव्यंजना पद्धति एक-दूसरे से अविभाज्य और अन्योन्याश्रित हैं. जयशंकर प्रसाद ने छायावाद की परिभाषा काव्यकला तथा अन्य निबन्ध पुस्तक में इस प्रकार दी है: ' 'जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे छायावाद नाम से अभिहित किया गया. रीतिकालीन प्रचलित परम्परा से, जिसमें बाह्य अर्थ की प्रधानता थी, इस शैली की कविताओं में भिन्न प्रकार के भावों की नये ढंग से अभिव्यक्ति हुई. ये नवीन भाव आन्तरिक स्पर्श से पुलकित थे. हिन्दी में नवीन शब्दों की भंगिमा स्पृहणीय आभ्यान्तर वर्णन के लिए प्रयुक्त होने लगी.''इस परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि छायावाद केवल अभिव्यंजना की विशेष प्रणाली या प्रतीक पद्धति नहीं है. बल्कि उसमें ऐसे सूक्ष्म और नवीन भावों की योजना भी हुई है जिनकी अभिव्यक्ति इस विशेष शैली के अतिरिक्त

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

अन्य किसी पद्धति से नहीं हो सकती थी. प्रसाद ने आगे लिखाः ‘ ‘छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर अधिक निर्भर करती है.’’[13]

उन्होंने इसकी तीन प्रधान विशेषताओं का उल्लेख किया है -स्वानुभूति की विवृति या आत्मव्यंजकता, सौन्दर्य प्रेम तथा अभिव्यक्ति की भंगिमा या सांकेतिकता का होना. डॉ. नगेन्द्र आदि आलोचकों ने छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह माना है. आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी इसे सांस्कृतिक नवजागरण से सम्बद्ध करके देखते हैं.

छायावाद के लिए ‘रोमांटिसिज्म’ का प्रयोग भी किया गया किन्तु यह प्रयोग पूर्णतः छायावादी काव्य पर चरितार्थ नहीं होता. छायावादी काव्य का सर्वप्रथम लक्षण यही है कि वह आत्माभिव्यंजक या विषय प्रधान होता है. बाह्यार्थनिरूपण और वस्तुवर्णन का उसमें अभाव-सा होता है. छायावाद को यूरोप के रोमांण्टिक काव्य सम्प्रदाय से अभिन्न मानकर चलने से यह भूल होती रही. जो आलोचक रोमांटिसिज्म और छायावाद को समतामूलक दृष्टि से देखते हैं वे रोमांटिसिज्म की प्रमुख विशेषताएं भी छायावाद में निहित हैं जैसे व्यक्तिगत भावनाओं की अभिव्यक्ति, प्रकृति में चेतना की अनुभूति, कल्पना वैभव, विस्मय की भावना, स्वानुभूति का रंग, आन्तरिक सौन्दर्य के प्रति विशेष आकर्षण, छन्द के बन्धनों से मुक्ति आदि तत्व छायावाद में समान रूप से मिलते हैं. कुछ आलोचक यह मानते हैं कि छायावाद का प्रारम्भ प्रकृति प्रेम तथा स्वानुभूति की व्यंजना से हुआ. वस्तुतः छायावाद में व्यापक मानवतावाद, नारी गरिमा, सांस्कृतिक जागरण, राष्ट्र प्रेम, विश्वबन्धुत्व आदि विषयों का भी समावेश था. पर उसमें नये युग की सामाजिकता और विचारधारा का समावेश नहीं हो सका. छायावादी काव्य रहस्यात्मक, निगूढ़, भाव प्रधान और वैयक्तिक हो गया तथा शिल्प एवं न्यास के अतिशय प्रयोग से वह सामान्य भावभूमि से पृथक् जा पड़ा. कविवर पन्त ने अपनी आधुनिक कवि शीर्षक पुस्तक में इस मत की पुष्टि की है और लिखा हैः ‘ ‘छायावाद काव्य न रहकर केवल अलंकृत संगीत बन गया था.’’छायावाद को प्रकृति काव्य सिद्ध करनेवाले भी कई आलोचक हैं. उनके मत में छायावाद का प्राण प्रकृति है. वह प्रधानतः प्रकृति काव्य है. प्रकृति का मानवीकरण अर्थात प्रकृति पर मानव व्यक्तित्व का आरोप है. ‘ ‘छायावादी काव्य ने प्रकृति के प्रति अनुराग की दीक्षा दी. अनुभूतियों को तीव्रता प्रदान की, कल्पना के द्वार मानो वायु के एक ही प्रबल झोंके से खोल दिये. भारत की प्रकृति का अन्यतम् दर्शन पाठक को छायावादी काव्य में मिला.’’ (प्रकाशचन्द्र गुप्त)[14]

छायावाद का शाब्दिक अर्थ, परिभाषा, वर्ण्य वस्तु, अभिव्यंजना शैली आदि की विस्तार से चर्चा करने के बाद जो भी अभिप्राय निकलता हो वह व्यावहारिक दृष्टि से छायावाद के चार प्रमुख रचनाकारों पर केन्द्रित हो जाता है. छायावाद प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी की उन रचनाओं का द्योतक है जो सन् 1918 से 1936 ई. के मध्य लिखी गयीं. छायावाद के इन चार स्तम्भों ने 1936 ई. तक रहस्यवाद, मानवतावाद, स्वच्छन्द प्रेम, नारी सम्मान, विश्व प्रेम, जीवन मीमांसा, प्रकृति वर्णन, (आलम्बन और उद्दीपन रूप में) विषयक जो कविताएं लिखीं वे छायावाद की प्ररिधि में आती हैं. किन्तु प्रश्न यह है कि सन् 1936 से 1940 के मध्य निराला और पन्त ने जो काव्य-सर्जन किया उसमें प्रगतिवाद का गहरा पुट ही नहीं अपितु सामाजिक, आर्थिक एवं युगीन समस्याओं का जिस रूप में वर्णन किया गया है वह विषयवस्तु की दृष्टि से शुद्ध छायावादी काव्य है या नहीं. छायावदी काव्य के प्रमुख वर्ण्य-विषयक प्रकृति प्रेम को ही लें तो इससे जिस छायावाद का आरंभ हुआ था अन्त तक आते-आते उसके प्रेम का प्रसार मानवजीवन तक हो गया.छायावादी युग में प्रमुख चार कवियों के अतिरिक्त कुछ अन्य कवियों ने भी छायावादी भाषा तथा भाववव्यंजना के स्तर पर प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति, नारी आदि विषयों पर कविताएं लिखीं किंतु उनको वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका जो प्रमुख चार कवियों को प्राप्त है. इन कवियों में रामकुमार वर्मा, भगवतीचरण वर्मा, मोहनलाल महतो वियोगी, जनार्दन प्रसाद झा द्विज, केदारनाथ मिश्र प्रभात, आरसी प्रसाद सिंह, उदयशंकर भट्ट आदि उल्लेखनीय नाम है.[15]

छायावाद के प्रमुख कवि

छायावाद आधुनिक हिन्दी काव्य की एक प्रमुख प्रवृत्ति है. इसका स्वरूप निर्धारण करते समय हमने उन तत्वों की ओर निर्देश किया है जो छायावादी कविता के साहित्यिक रूप को उद्घाटित करते हैं. जिन कवियों की रचनाओं में छायावादी काव्य के तत्व प्रमुख रूप से पाये जाते हैं उनको अब हिन्दी साहित्य के वरिष्ठ आलोचकों ने ‘प्रस्थान चतुष्टय’ में परिगणित किया है. जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ , सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा, को उनके काव्य की भाववस्तु एवं अभिव्यंजना शिल्प के आधार पर छायावाद के स्तम्भ के रूप में स्वीकार किया जाता है.जयशंकर प्रसाद (1889-1937) : छायावादी काव्य के प्रमुख कवि प्रसाद का जन्म काशी के सुंघनी साहु नाम से एक प्रसिद्ध सम्पन्न वैश्य परिवार में हुआ था. इनकी स्कूली शिक्षा तो आठवीं कक्षा तक ही हुई थी किन्तु घर पर रहकर इन्होंने संस्कृत, हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं का अच्छा अभ्यास किया. शैशव से ही इनका कविता के प्रति गहरा अनुराग था. खड़ी बोली हिन्दी में कविता लिखने से पहले प्रेमपथिक की रचना उन्होंने ब्रजभाषा में की थी, किन्तु बाद में उसे भी खड़ी बोली में रूपान्तरित कर दिया. प्रसादजी ने द्विवेदी युग में ही काव्य क्षेत्र में प्रवेश कर लिया था और कानन कुसुम, प्रेमराज्य, अयोध्या का उद्धार,

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

प्रेमपथिक, करुणालय, महाराणा का महत्व, शीर्षक कविता-पुस्तकों की रचना बीसवीं शती के दूसरे शतक में की थी. इसी दशक में उन्होंने फुटकर रचनाएं भी लिखी थीं. उस समय द्विवेदीजी खड़ी बोली का ेपरिनिष्ठित रूप देकर सथापित करने में संलग्न थे. प्रसाद ने जब प्रेम पथिक का रूपान्तरण ब्रजभाषा से खड़ी बोली में किया तब उनके मन में भाषा-विषयक द्वन्द्व काम कर रहा था. कानन कुसुम और झरना के परवर्ती संस्करणों में यह लक्षित किया जा सकता है कि जो कविताएं द्विवेदी युग में लिखी गयी थीं, उनकी भाषा तत्सम प्रधान खड़ी बोली थी, किन्तु शनैः-शनैः प्रसाद ने अपनी भाषा को परिमार्जित करते हुए, अभिव्यंजना शिल्प का श्रेष्ठ उदाहरण बना दिया. आंसू शीर्षक खण्ड काव्य को हिन्दी के आलोचक छायावादी काव्य का श्रेष्ठ उदाहरण मानते हैं. लहर, झरना और कामायनी प्रसाद की सुप्रसिद्ध छायावादी रचनाएं हैं. कामायनी का प्रकाशन 1935 ई. में हुआ और इस महाकाव्य के प्रकाशित होते ही हिन्दी जगत में प्रसादजी की प्रतिभा पाण्डित्य, अध्ययन, दर्शन और गंभीर चिन्तन की छाप सर्वत्र व्याप्त हो गयी. यह कहना अत्युक्ति न होगी कि बीसवीं शताब्दी में कामायनी से अधिक श्रेष्ठ गंभीर और दार्शनिक मनीषा का महाकाव्य हिन्दी में दूसरा नहीं लिखा गया.छायावादी प्रवृत्तियों के दर्शन सबसे पहले झरना में होते हैं. उसमें कवि ने सूक्ष्म मानसिक भावनाओं को व्यक्त करके कविता में चिन्तन का एक नया आयाम जोड़ा है. आंसू शीर्षक रचना को प्रारम्भ में सामान्य पाठक ने व्यक्तिगत वेदना का काव्य समझने की भूल की थी, किन्तु आंसू में विश्व-कल्याण की भावना को वेदना के स्तर पर अभिव्यक्त किया गया. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आंसू के विषय में लिखा है किः ‘ ‘कहने का तात्पर्य यह है कि वेदना की कोई एक निर्दिष्ट भूमि न होने से सारी पुस्तक का एक समन्वित प्रभाव निष्पन्न नहीं होता.’’वास्तव में आंसू एक स्मृति काव्य है. कवि ने अतीत जीवन की अनुभूतियों को स्मृति के माध्यम से वेदनामयी अभिव्यक्ति दी है. यही कारण है कि अपनी वेदना को कवि ने विश्व-प्रेम में रूपान्तरित कर दिया है.कामायनी प्रसाद की अन्तिम और सर्वश्रेष्ठ रचना है. यह कृति मानव सभ्यता के विकास की मनोवैज्ञानिक कथा प्रस्तुत करती है. कथानक संक्षिप्त है किन्तु जीवन के अनेक पक्षों को समन्वित करके कवि ने मानव जीवन के विकास के लिए एक व्यापक आदर्श व्यवस्था की स्थापना का प्रयास किया है. कामायनी में पात्रों का जमघट नहीं है. तीन प्रमुख पात्रों (मनु, श्रद्धा, इड़ा) के जीवन की अनुभूतियों, कामनाओं, आकांक्षाओं का गम्भीर स्तर पर वर्णन किया गया है. प्रसाद ने स्वयं इसकी भूमिका में लिखा है कि ‘यह आख्यान इतना प्राचीन है कि इतिहास में रूपक पक्ष का भी अद्भुत मिश्रण हो गया है. इसलिए मनु, श्रद्धा, इड़ा इत्यादि अपना ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए सांकेतिक अर्थ की भी अभिव्यक्ति करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं.’ मनु अर्थात मन के दोनों पक्ष हृदय और मस्तिष्क का सम्बन्ध क्रमशः श्रद्धा और इड़ा से भी सरलता से लग जाता है. कामायनी में हृदय तत्व की प्रतिष्ठा करते हुए कवि ने शैव दर्शन के आनन्दवाद को जीवन के पूर्ण उत्कर्ष का साधन माना है. प्रत्यभिज्ञा दर्शन के अध्येता प्रसादजी का दार्शनिक चिन्तन कामायनी में ओत-प्रोत है. अतः कुछ विद्वान इसे साहित्यिक कृति से अधिक दार्शनिक ग्रन्थ के रूप में ग्रहण करते हैं. वस्तुतः कामायनी दार्शनिक चिन्तन से परिपूर्ण होने पर भी साहित्य की कसौटी पर उच्चकोटि का महाकाव्य ही है.[14]

श्री जयशंकर प्रसाद का रचना-संसार बहुत विस्तृत था. उन्होंने कविता के अतिरिक्त, नाटक, उपन्यास, कहानी और समीक्षात्मक निबन्ध लिखकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया. नाटक के क्षेत्र में तो उन्होंने मध्ययुगीन भारत को उसके वैभवशाली उपादानों से अलंकृत कर पाठक और दर्शक क ेलिए समन्वित रूप से प्रस्तुत किया है. उनके नाटकों में भारतीय इतिहास का जो गौरवशाली रूप उभरता है वह हम नाटकों की समीक्षा में विस्तारपूर्वक लिखेंगे. अन्य गद्य विधाओं पर भी सम्बद्ध प्रकरण में यथायोग्य लिखा जायेगा.

सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ (1899-1961) : निराला का जन्म महिषादल स्टेट मेदिनीपुर (बंगाल) में सन् 1897 की वसन्त पंचमी के दिन हुआ था. उनका शैशव अभावों की पीड़ाओं को झेलते हुए व्यतीत हुआ किन्तु इस दुष्चक्र में फंसे रहने पर भी उनका मनोबल कभी क्षीण नहीं हुआ. उनका मूल स्थान उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले में गढ़ाकोला गांव है. उनके पिता मेदिनीपुर में सैनिक के रूप में कार्य करते थे. निराला की मां की मृत्यु शैशव में ही हो गयी थी, अतः उन्हें पिता के संरक्षण में रहना पड़ा. कुछ समय बाद पिता का भी असामयिक निधन हो गया. महामारी के विकराल प्रकोप में घर के कई अन्य संबंधी भी चल बसे. उसी समय पत्नी मनोहरा देवी की भी मृत्यु हो गयी. इस तरह निराला अपनी युवावस्था में विपत्तियों के जंजाल में पूरी तरह फंस गये. किन्तु वे अपने कुटुम्ब का पालन-पोषण करते रहे और पथ से विचलित नहीं हुए. बंगाल में रहते हुए उन्होंने अपनी युवावस्था में स्वामी रामतीर्थ, विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस आदि की रचनाओं का अध्ययन किया था. इससे उनके विचार क्षेत्र में दार्शनिकता का प्रवेश हुआ. महिषादल में रहते हुए उनका अपने मालिकों से कुछ विवाद हो गया था, इसलिए नौकरी छोड़कर वे कलकत्ता चले गये और रामकृष्ण मिशन के समन्वय पत्र में काम करने लगे. उनकी सबसे पहली रचना ‘जुही की कली’ सन् 1916 ई. में प्रकाश में आयी. इसे हम उनकी प्रारम्भिक छायावादी रचना कह सकते हैं. सन् 1916 में ही उन्होंने हिन्दी-बाङला का तुलनात्मक व्याकरण लिखा जो सरस्वती में प्रकाशित हुआ. समन्वय के लिए लेख आदि लिखते समय इनकी दार्शनिक चेतना क्रमशः प्रबुद्ध होती गयी और कविता में उसका प्रभाव पड़ने लगा. सन् 1923 में महादेव बाबू ने उन्हें अपने मतवाला शीर्षक पत्र के सम्पादक मण्डल में शामिल किया. मतवाला में आने के बाद उनकी काव्य प्रतिभा के प्रसार के लिए अच्छा अवसर मिला और लगभग तीन वर्षों तक मतवाला में काम करते हुए उन्होंने बहुत सुन्दर कविताएं लिखीं जो परिमल में संकलित हैं.[15]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

कलकत्ता प्रवास में उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहा और कलकत्ता छोड़कर उन्होंने लखनऊ से प्रकाशित होनेवाली सुधा नामक पत्रिका के सम्पादकीय विभाग में काम करना प्रारम्भ किया. लगभग बारह वर्ष वे लखनऊ में रहे और आर्थिक विपन्नावस्था में उन्होंने अपना यह समय व्यतीत किया. इन वर्षों में उन्होंने लोकमानस को ध्यान में रखकर कुछ कहानियां और उपन्यास लिखे. सुधा के लिए फुटकर लेख भी लिखते रहे. सन् 1936 में नये स्वर ताल युक्त उनके गीतों का संग्रह गीतिका नाम से प्रकाशित हुआ. उसके बाद 1938 ई. में उनका अनामिका काव्य संग्रह प्रकाश में आया और इसी वर्ष उनकी प्रबन्धात्मक रचना तुलसीदास प्रकाशित हुई.छायावादी काव्य को विस्तृत भूमि पर प्रतिस्थित करने का श्रेय निराला को है. उन्होंने हिन्दी काव्य क्षेत्र में मुक्त छन्द का प्रारम्भ किया. वे इस छन्द के प्रथम पुरस्कर्ता कहे जाते हैं. उन्होंने परिमल की भूमिका में लिखा है. ‘ ‘मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है. मनुष्य की मुक्ति कर्म बन्धन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दों के शासन से अलग हो जाना है.’’

मेरे गीत और कला शीर्षक निबन्ध में उन्होंने लिखा है कि भावों की मुक्ति छन्दों की भी मुक्ति चाहती है. यहां भाषा, भाव और छन्द तीनों स्वच्छन्द हैं. जुही की कली शीर्षक कविता इसी कोटि की मुक्त छन्द की रचना है. परिमल में निराला ने मुक्त गीत शीर्षक से कुछ रचनाएं संकलित की हैं. जिनमें तुक का आग्रह तो है पर मात्राओं का नहीं. छायावादी कवियों ने जो प्रगीत लिखे हैं उनमें शास्त्रानुमोदित स्वर, लय, ताल आदि का बन्धन नहीं है. उनकी कविताओं में श्रृंगारिक भावना, स्वर, लय, ताल आदि का बन्धन नहीं है. उनकी कविताओं में श्रृंगारिक भावना, माधुर्य भाव के साथ प्रकृति वर्णन तथा देश-प्रेम का चित्रण भी मिलता है. संगीतात्मकता का ध्यान रखते हुए भी काव्य पक्ष की क्षति नहीं होने दी गयी है. सन् 1935 से सन् 1940 के बीच लिखी हुई कविताएं उनकी प्रौढ़ रचनाएं कही जा सकती हैं जो अनामिका में संकलित हैं. सरोजस्मृति, राम की शक्तिपूजा, प्रेयसी आदि उनकी श्रेष्ठतम रचनाएं हैं. राम की शक्ति पूजा एक प्रौढ़ महाकाव्यात्मक रचना है जो निराला को महाप्राण कवि सिद्ध करती है. इस कविता में कवि का पौरुष और ओज चरमोत्कर्ष के साथ अभिव्यक्त हुआ है. तुलसीदास शीर्षक कविता में तुलसी के जीवन वृत्त पर प्रकाश न डालकर उसके मानस पक्ष का चित्रण किया गया है जो तत्कालीन परिवेश को उद्घाटित करता है. भारत के सांस्कृतिक ह्रस के पुनरुद्धार की प्रेरणा तुलसी को प्रकृति के माध्य मे से ही मिलती हैः

करना होगा यह तिमिर पार

देखना सत्य का मिहिर द्वार.

अपनी प्रौढ़ कृतियों के साथ ही निराला ने व्यंग्य-विनोदपूर्ण कविताएं भी लिखी हैं. कुकुरमुत्ता उपालम्भ और व्यंग्य के साथ ऐसी ही रचना है. अणिमा, बेला और नये पत्ते में सामाजिक तथा राजनीतिक विषयों पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हुए उन्होंने छोटी-छोटी कविताएं लिखीं. इनमें उर्दू, फारसी के छन्दों को हिन्दी में ढालने का प्रयास देखा जा सकता है. इसके बाद के दो गीत संग्रह अर्चना और गीत गुंज में गहरी आत्मानुभूति की झलक और कहीं व्यंग्योक्तिपूर्ण कटाक्ष हैं. उनके व्यंग्य की असली बानगी देखने के लिए कुल्ली भाट और बिल्लेसुर बकरिहा जैसी गद्य रचनाओं पर भी दृष्टिपात करना आवश्यक है.[13]

संक्षेप में निराला के समस्त काव्य साहित्य पर दृष्टिपात करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वे परम्परागत गलित रूढ़ियों के विरोधी तथा काव्य जगत में नवीन चेतना के उद्घोषक के रूप में पाठक के सामने आते हैं. इसमें तो तनिक भी संदेह नहीं कि निराला भारतीय संस्कृत के द्रष्टा कवि हैं.

मध्यम श्रेणी के परिवार में उत्पन्न होकर और परिस्थितियों के घात -प्रतिघात को सहन करते हुए स्वस्थ आदर्श के लिए सब कुछ बलि करनेवाला महापुरुष हिन्दी में महाप्राण निराला ही हैं. निराला ने सारे जीवन सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक तथा साहित्यिक संघर्ष झेले और अविचलित रहकर जो उच्चस्तरीय साहित्य हिन्दी जगत को प्रदान किया वह सदैव उस महाप्राण कवि का स्मरण कराता रहेगा. निराला की मृत्यु अक्टूबर मास में सन् 1961 ई. में इलाहाबाद में हुई. निराला का वैविध्यपूर्ण रचना-संसार उनके इसी व्यक्तित्व का बोध कराता है.

सुमित्रानन्दन पन्त (1990-1977) : पन्त का जन्म 20 मई 1900 ई. को कूर्मांचल प्रदेश के कौसानी ग्राम में हुआ. कविवर पन्त ने साठ वर्ष एक रेखांकन में अपने जीवन के रोचक प्रसंगों का वर्णन किया है. इस पुस्तक से विदित होता है कि शैशव से ही पन्त को प्रकृति से गहरा लगाव था. प्राकृतिक दृश्यों को देखकर उनके मन में तरह-तरह के सुन्दर भावों का उद्वेलन होता था. सात वर्ष की उम्र में ही कवि को छन्द रचना की प्रेरणा प्रकृति प्रेम से उत्पन्न हुई. इसलिए उन्होंने 1907 ई. से 1918 ई. तक के काल को अपने कवि जीवन का प्रथम चरण माना है. उनके घर में सरस्वती, वेंकटेश्वर समाचार, अल्मोड़ा अखबार आदि पत्र-पत्रिकाएं आती थीं. इन्हें पढ़कर उनके मन में हिन्दी के प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ. उसी समय मैथिलीशरण गुप्त और अयोध्या सिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’ की रचनाएं सरस्वती में प्रकाशित होती थीं जिन्होंने कवि को छन्द योजना के प्रति आकर्षित किया. पन्त ने अपने आत्मवृत्त में दोनों कवियों के प्रति सम्मान का

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

भाव व्यक्त किया है. जब वे अल्मोड़ा के हाईस्कूल में पढ़ने आये उस समय उन्होंने अपना घर का नाम गुसाईदत्त से बदलकर सुमित्रानन्दन रख लिया. मैट्रिक परीक्षा पास करने के बाद सन् 1918 में कवि बनारस के जियानारायण हाईस्कूल में शिक्षा प्राप्त करने के लिये चले गये. बनारस में उनका कवयित्री सरोजनी नायडू, रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा अंग्रेजी की रोमानी कविता से परिचय हुआ. काशी में ही उन्होंने स्थानीय काव्य प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया. काशी से लौटकर उन्होंने उच्छ्वास और ग्रन्थि की रचना की. इन कृतियों में उनकी वयः सन्धि की अतीन्द्रिय प्रेम भावना एवं आन्तरिक आकुलता के दर्शन होते हैं. सन् 1919 में कवि ने प्रयाग के म्योर कॉलेज में प्रवेश किया और वहीं रहते हुए छाया और स्वप्न जैसी सुन्दर रचनाओं द्वारा कवि समाज का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया. 1922 से 1930 तक पन्त की जो रचनाएं प्रकाश में आयीं वे उनके छायावादी काव्य की प्रौढ़ रचनाएं मानी जाती हैं. पल्लव, वीणा, ग्रन्थि और गुंजन का प्रकाशन कवि की काव्य साधना का नया पक्ष उद्घाटित करता है जो प्रकृति और मानव सौन्दर्य के प्रति कवि की कला चेतना की सूचना देता है.

सन् 1931 ई. में पन्त कालाकांकर चले गये और वहां उनकी युवावस्था के सर्वश्रेष्ठ वर्ष, सन् 1930 से 40 तक व्यतीत हुए. कालाकांकर में उन्होंने ज्योत्स्ना जैसी काव्य कृति की रचना की. उन दिनों पंत के मन में वैचारिक द्वन्द्व चल रहा था.[10]

गांधीवाद और मार्क्सवाद के विविध पक्षों पर इन्हीं दिनों उन्होंने अपने काव्य की भाव-सृष्टि में परिवर्तन किया. सुन्दरम् की संस्तुति छोड़कर वे सत्यम् की ओर आकृष्ट हुए अर्थात् उन्होंने सामाजिक यथार्थवाद के पक्ष पर अपना ध्यान केन्द्रित किया. कालाकांकर प्रवास के दौरान कवि का प्रयाग और लखनऊ के साहित्यिक जीवन से निकट सम्पर्क बन सका और राजनीतिक-सामाजिक क्षेत्रों की नवीनतम प्रवृत्तियों की जानकारी से उन का संबंध जुड़ा. सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय कवि का मन बहुत उद्विग्न रहा और वह अल्मोड़ा चले गये. वहां उदयशंकर केन्द्र से संबंध स्थापित कर उनकी टोलह में शामिल होकर भारत-भ्रमण किया. सन् 1944 में उन्होंने उदयशंकर के कल्पना चित्र के लिए गीत भी लिखे और इसी समय मद्रास भ्रमण करते हुए पहली बार योगी अरविन्द और उनकी दार्शनिक एवं साधनात्मक प्रवृत्तियों से परिचय प्राप्त किया. इस काल को उन्होंने अपने जीवन का (मानवता) स्वप्न काल कहा है. सन् 1950 ई. में वह आल इण्डिया रेडियो के परामर्शदाता के पद पर नियुक्त हुए और सन् 1957 ई. के अप्रैल तक रेडियो से प्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध रहे. इस कार्य काल में उन्होंने रजत शिखर, शिल्पी, सौवर्ण और अतिमा नाम से काव्य संग्रह तथा काव्य रूपक की रचना की. अतिमा में रूपकों के अतिरिक्त सन् 1954 ई. की स्फुट रचनाएं भी संकलित हैं. कवि का नवीन संग्रह 'कला और बूढ़ा चांद' उन की प्रसिद्ध रचनाओं का संग्रह (1958) है जिसे सन् 61 में साहित्य अकादमी से पुरस्कृत किया गया. इन रचनाओं का रूप विधान पिछली छायावादी रचनाओं से भिन्न कोटि का है. पन्त की एक विशाल रचना लोकायतन आध्यात्मिक चेतना का महाकाव्य है जिस पर अरविन्द दर्शन का गहरा प्रभाव लक्षित किया जा सकता है.

पन्त का कृतित्च हिन्दी साहित्य की आधुनिक चेतना का प्रतीक है जो इहलौकिक जीवन मूल्यों के निर्माण की ओर अग्रसर है. युग-धर्म को दृष्टि में रखते हुए पन्तजी ने युगान्त, युगवाणी और ग्राम्या शीर्षक से जो कविता संग्रह प्रकाशित किये उनमें प्रगतिवादी चेतना का संस्पर्श देखा जा सकता है. उत्तरा, युगपथ, स्वर्ण धूलि, स्वर्ण किरण आदि रचनाएं उनके जीवन चिन्तन को एकांगी न बनाकर सार्वभौम दृष्टि से युगधर्म के भौतिक, सामाजिक और नैतिक पहलुओं के साथ आध्यात्मिक चेतना के समानान्तर चलनेवाले तत्व हैं. उन्होंने प्रकृति, नारी, सौन्दर्य और मानव जीवन की ओर देखने की मध्यवगा ीर्य जीवन दृष्टि को परिष्कार दिया है. परवर्ती कविताओं मे राष्ट्र रंगभेद से ऊपर उठकर अखिल मानव की कल्याणकामना को उसी तरह मुखरित किया है जिस तरह संतों की वाणी में मानव की महनीयता ध्वनित होती है. कवि वर्तमान मानव जीवन के विषम संकट को व्यक्त करते हुए एक नये आदर्श भविष्य का चित्रण करता है जो मुख्यतः अध्यात्म पर आश्रित है. अतः काव्य की दृष्टि से इसे किस सीमा तक ग्राह्य माना जाये यह एक विचारणीय विषय है.[11]

पन्त ने अपने काव्य के सम्बन्ध में लिखा है.

' 'मेरा काव्य प्रथमतः इस युग के महान संघर्ष का काव्य है जो लोग युग संघर्ष तक ही सीमित रखकर उसे केवल बाहरी राजनीतिक-आर्थिक स्तरों पर ही देख सकते हैं उनकी बात मैं नहीं करता. आज के विराट मानवीय संघर्ष को वर्ग-संघर्ष तक ही सीमित करना विगत युगों की खर्वचेतना तथा ऐतिहासिक अन्धकार को एक प्रतिक्रिया माना. उन अर्थों में मार्क्सवादी मैं कभी नहीं रहा. मुझमें यह दृष्टिकोण परिवर्तन प्रेम के कारण नहीं किन्तु भावनात्मक आवश्यकता के कारण सम्भव हुआ. अरविन्द की साधना-पद्धति आत्म-मुक्ति संबंधी न होते हुए भी सामूहिक मुक्ति की नहीं है. मेरी प्रेरणा के स्रोत निःसंदेह मेरे भीतर रहे हैं जिन्हें युग की वास्तविकता ने खींचकर समृद्ध बनाया है. न मुझे यही लगता है कि दर्शन द्वारा मनुष्य सत्य की प्राप्ति कर सकता है. ये (विचारसार) केवल मेरे कवि मन के प्रकाश स्फुरण अथवा भाव प्ररोह हैं जिन्हें मैंने अपनी रचनाओं में शब्द मूर्त करने का प्रयास किया है.''संक्षेप में, पन्त वर्तमान युग को महासंक्रान्ति का युग कहते हैं. इस युग में विघटन, विश्रृंखलता, नैतिक मूल्यों का ह्रास चारों ओर दिखायी पड़ रहा है. ऐसे युग में पन्त नवीन स्वप्न की आकांक्षा करके एक महान जीवन और विराट आत्मा की परिकल्पना करते हैं. उनका काव्य आत्मोकर्ष का काव्य है.

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

यह आत्मोकर्ष अपनी समग्र संरचना में एक सार्वभौमिक स्वेच्छा के फलक पर भविष्योन्मुखी काव्य है. संपूर्ण काव्य सम्पदा के भीतर से उन्होंने एक नये और निजी अध्यात्म की रचना की है. उनकी रचनाएं भारतीय जीवन की समृद्ध सांस्कृतिक चेतना से गहन साक्षात्कार कराती हैं. उन्होंने खड़ी बोली की प्रकृति-शक्ति और सामर्थ्य की पहचान का अभियान चलाया और उसे वाक्य-विन्यास और शब्द-सम्पदा से समृद्ध भी किया. उनकी मृत्यु प्रयाग में 29 दिसम्बर सन् 1977 ई. को हुई.महादेवी वर्मा (1907-1987) : महादेवी वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में होली के दिन 1907 ई. में हुआ. उनकी माताजी धार्मिक वृत्ति की महिला थीं और घर में रामायण का सस्वर पाठ किया करती थीं. शैशव के पांच वर्ष तो फर्रुखाबाद में ही कटे किन्तु उनके पिता इन्दौर में काम करते थे अतः वहीं के मिशन स्कूल में इन्हें प्रविष्ट कर दिया गया. घर की पढ़ाई के लिए एक पण्डित, एक मौलवी, एक ड्राइंग टीचर तथा संगीत शिक्षक का प्रबन्ध कर दिया गया. 14 वर्ष की अल्पायु में में इनका विवाह हो गया. किन्तु इनका मन पढ़ाई में लगा हुआ था, अतः वैवाहिक दायित्व को इन्होंने स्वीकार नहीं किया.अध्ययन की रुचि के कारण सन् 1919 में प्रयाग के क्रास्थवेट कॉलेज में पुनः इन्होंने प्रवेश ले लिया. वहीं से प्रथम श्रेणी में मिडिल की परीक्षा पास की और सर्वप्रथम रहने के उपलक्ष्य में राजकीय छात्रवृत्ति भी प्राप्त की. अध्ययन के समय ही उनकी रुचि बौद्ध दर्शन की हुई और एक बार भिक्षुणी बनने का विचार भी इनके मन में आया. परिस्थितिवश वे भिक्षुणी तो नहीं बन सकीं किन्तु बालकों की शिक्षा के प्रति इनका रुझान हो गया और इन्होंने प्रयाग के आसपास के गांवों में जाकर बच्चों को पढ़ाना प्रारम्भ कर दिया. सन् 1931 में प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. किया और प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य के पद पर कार्य करने लगीं. उन्हीं दिनों प्रयाग से प्रकाशित होनेवाले चांद मासिक पत्र में भी वे अवैतनिक रूप से कार्य करती रहीं.साहित्य में उनका प्रवेश नीरजा शीर्षक कविता संग्रह के प्रकाशन के साथ हो गया था और उन्हें इस रचना पर साहित्य सम्मेलन की ओर से शेख सरिया पुरस्कार प्राप्त हुआ. प्रयाग महिला विद्यापीठ के निर्माण में महादेवी का अमिट योगदान है और लम्बे समय तक वे इस विद्यापीठ के कुलपति पद के दायित्व को संभाले रहीं. साहित्यिक अभिरुचि के साथ सामाजिक कार्यों में भी उनकी रुचि उत्तरोतर बढ़ती गयी और उन्होंने प्रयाग में अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन, मीराजयन्ती का शुभारम्भ, नैनीताल में मीरा मन्दिर कुटीर का निर्माण, प्रयाग में साहित्यकार संसद की स्थापना, साहित्यकार संसद की ओर से अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन तथा साहित्यिक पर्व का आयोजन, प्रसाद जयन्ती समारोह का साहित्यिक कार्यक्रम, वाणी मन्दिर का निर्माण आदि कार्य किये. गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर से भी उन्होंने भेंट की थी और राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद द्वारा वाणी मन्दिर का शिलान्यास कराया. इन समस्त कार्यकलापों के मूल में महादेवीजी की साहित्यिक चेतना ही कार्य करती रही और उन्होंने गार्हस्थ्य जीवन के दायित्यों से मुक्त रहकर अपना सारा जीवन साहित्य और समाज को समर्पित कर दिया.महोदवी वर्मा के संस्कार भारतीय जीवन दर्शन से जुड़े हुए थे. भारतवर्ष को वे एक विशाल देश की नहीं अपितु विद्या, आस्था और वाणी का केन्द्र भी मानती थीं. भारत के तीर्थ स्थलों के प्रति भी उनके मन में श्रद्धा थी. बद्रीनाथ की यात्रा तो उन्होंने दो बार पैदल ही की थी. दक्षिण भारत की साहित्यिक यात्रा में वे कन्याकुमारी तक गयीं और अपने साथ दिनकर, इलाचन्द्र जोशी को भी ले गयी थीं. महादेवी की काव्य-यात्रा को पांच खण्डों में विभाजित करके देखा जा सकता है. उनके संग्रहों के नाम उनकी काव्य-यात्रा को संकेतित करते हैं. पहली रचना नीहार में जीवन के प्रति एक रहस्यमय व्याकुल मात्र दृष्टिगत होता है. रश्मि की कविताओं में उस रहस्यमयता का स्पष्टीकरण है. नीरजा अभिव्यक्ति की दृष्टि से उनका सुन्दर काव्य-संग्रह है. अभिव्यक्ति का जो स्तर आरम्भ में मिलता है वह आगे चलकर और अधिक संवेदनीय बन गया है. सान्ध्य गीत में एक समापन का आग्रह-सा लगता है. इस प्रकार इन चारों पुस्तकों को उन्होंने यामा शीर्षक से प्रकाशित किया है. इसके बाद आगे चलकर दीपशिखा में कवयित्री ने स्वयं को जीवन के प्रति सम्पूर्ण भाव से समर्पित कर दिया. सारी ललक संवेदना की आकुल विस्मयानुभूति और किसी चिरंतन के प्रति समर्पण की उत्सुकता अपनी पूर्णता को प्राप्त कर निरपेक्ष भी हो गयी है. सान्ध्यगीत की भूमिका में इन्होंने अपने रहस्यात्मक संवेदन को स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है. वास्तव में उनका काव्य संवेदना की अमूर्तता का काव्य है, जिसके सारे प्रतीक अपने आप में मूर्त हैं. संवदेना की इस अमूर्तता के बारे में लिखते हुए महादेवी ने उसे 'एक निराले स्नेह सम्बन्ध की सृष्टि' कहा है. यह निराला स्नेह सम्बन्ध ही उनके समूचे व्यक्तित्व की देन है.[14]

सान्धगीत की भूमिका में उन्होंने लिखा है किः

' 'आज गीत में हम जिसे नये रहस्यवाद के रूप में ग्रहण कर रहे हैं वह इन सबकी विशेषताओं से युक्त होने पर भी उन सबसे भिन्न है. उसने प्राविद्या की अपार्थिता ली, वेदान्त के अद्वैत की छाया मात्र ग्रहण की, लौकिक प्रेम से तीव्रता उधार ली और इन सबको कबीर के सांकेतिक दाम्पत्य भाव-सूत्र में बांधकर एक निराले स्नेह सम्बन्ध की सृष्टि कर डाली जो मनुष्य के हृदय को आलम्बन दे सका तथा मस्तिष्क को हृदयमय और हृदय को मस्तिष्टमय बना सका.''महादेवी की समस्त रचनाएं मुक्तक रूप में हैं. उनके गीत छन्द, लय, स्वर, ताल आदि की सृष्टि से गेय होने के साथ प्रवाहपूर्ण भी है. अभिव्यक्ति के जितने कोण, प्रेम सम्बन्धों की जितनी सहज आवेगपूर्ण और आकर्षक मुद्राएं महादेवी के गीतों में मिलती हैं उतनी अन्यत्र दुर्लभ हैं. गेयता और प्रभावान्विति की दृष्टि से उनकी भाषा और शब्द संयोजन सौष्ठवपूर्ण होने के साथ भाव सम्प्रेषण में भी पूर्ण हैं. विभिन्न आवेगों और मुद्राओं के अंकन के लिए उन्होंने अपनी भाषा में जो विभिन्न प्रतीक गूंथे हैं वे स्वतंत्र अध्ययन का विषय हैं. उन्होंने अपने संकेतार्थों के लिए अधिकांश प्रतीक प्रकृति से ग्रहण किये हैं. इसलिए प्रकृति को वे अनेक रूपों में नियोजित करती हैं. इसी कारण उनका सम्पूर्ण काव्य एक प्रकार से श्रेष्ठ प्रकृति काव्य का संकेत रूप

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

ग्रहण करता-सा लगता है तो दूसरी ओर यह मानव संवेदना की पूर्णता से जुड़ा हुआ है. उन्होंने भाव संवेदन के अनुकूल ही चित्रफलक प्रस्तुत किये हैं. उनके प्रतीकार्थों में बहुधा रंग, प्रकाश आकार और बोध का साम्य-ग्रहण देखा जा सकता है. जैसे अन्धकार, रजनी, हरीतिमा, दीपक, ज्योति, बादल, वीणा, पुष्प, फल, वृक्ष, पर्वत, सागर, चांदनी, प्रातः, कोहरा आदि का संसार संकेतार्थों द्वारा उनकी कविता में फैला पड़ा है. छायावादी काव्य की जिन विशेषताओं का उल्लेख आलोचक वर्ग प्रायः करता रहता है वे महादेवी के काव्य में उपलब्ध हैं. जैसे भाषा के संस्कार में परिष्कार और परिमार्जन, कल्पना की गहराई, अनुभव की मार्मिकता और पूर्णता, नवीन तथा सर्वथा मौलिक अप्रस्तुत विधान की योजना, लय, स्वर, ताल, ध्वनि आदि का सन्तुलित संयोजन, बाह्यार्थ निरूपक स्थूल विषयों की उपेक्षा तथा सूक्ष्म चिन्तन योग्य विषयों का समावेश महादेवी के काव्य में उपलब्ध होता है.सान्ध्य गीत के बाद जब महादेवी ने दीपशिखा की रचना की तब उन्होंने गीतों के आधार पर उसमें कुछ रेखाचित्र भी प्रस्तुत किये. ये चित्र उनके गीतों में वर्णित भाव को स्पष्ट करते हैं ऐसा नहीं कहा जा सकता. चित्र का भाव कहीं-कहीं गीत के भाव से मेल नहीं खाता किन्तु माध्यम की दृष्टि से महादेवी अपने चित्रों को सूक्ष्म और स्थूल के बीच में स्थित मानती हैं. उन्होंने लिखा हैः ‘ ‘मेरे गीत और चित्र दोनों के मूल में एक ही भाव रहना जितना अनिवार्य है, उनकी अभिव्यक्तियों में अन्तर उतना ही स्वाभाविक है. गीतों के विविध रूप, रंग, भाव, ध्वनि सब एकत्र हैं. पर चित्र में इन सबके लिए अवसर नहीं होता, उनमें प्रायः रंगों की विविधता और रेखाओं के बाहुल्य में भी एक ही भाव अंकित हो पाता है. इसी से मेरा चित्र गीत को एक मूर्त पीठिका मात्र दे सकता है, उसकी सम्पूर्णता बांध लेने की क्षमता नहीं रखता.’’महादेवी की कविता छायावादी काव्य में कई दृष्टियों से अपना स्वतंत्र स्थान रखती हैं. प्रबन्धात्मकता से बचते हुए प्रतीकों का आश्रय लेकर उन्होंने जो गीत-रचना की है वह छायावादी काव्य में अपना स्वतन्त्र स्थान रखती है. महादेवी की रचनाओं में सप्तपर्णा एक विशेष प्रकार की रचना है. इसमें महादेवी ने वैदिक ऋचाओं तथा भारतीय वाङ्मय के सुप्रसिद्ध ग्रन्थों से कुछ अंश लेकर उन्हें हिन्दी में रूपान्तरित किया है. महादेवी का संस्कृत भाषा और साहित्य से, विद्यार्थी जीवन से ही घनिष्ठ सम्बन्ध था. प्राकृतिक दृश्यों में भी हिमालय, गंगोत्री, यमुनोत्री, कन्याकुमारी आदि रमणीय प्राकृतिक दृश्य उनके मन में जन्मजात संस्कार की तरह बैठ गये थे. वैदिक साहित्य और कालिदास उनके प्रेरणा स्रोत रहे. उन्हें देश के जागरण की पेररणा भी संस्कृत साहित्य से ही मिलती है. रामायण, महाभारत, धरगाथा, अश्वमेघ, कालिदास, भवभूति, जयदेव आदि की रचनाओं के जिन अंशों का अनुवाद उन्होंने किया है वह दिव्य ज्ञान का श्रेष्ठ भण्डार मानकर ही किया है. सप्तपर्णा के अनूदित अंश हिन्दी माध्य में मौलिक रचना का आस्वाद प्रदान करते हैं. उनकी एक रचना अग्निरेखा नाम से उनके निधन के बाद साहित्य सहकार न्यास ने प्रकाशित की है जिसमें उनकी कुछ पूर्व अप्रकाशित रचनाएं हैं. महादेवी ने पद्य के साथ गद्य में भी विपुल साहित्य का सर्जन किया था. संस्मरण साहित्य में अतीत के चलचित्र, पथ के साथी, स्मृति की रेखाएं, अत्यन्त प्रसिद्ध हैं. शृंखला की कड़ियां शीर्षक पुस्तक में महिला जगत के उत्थान के लिए व्याख्यान शैली के लेख हैं.महादेवी वर्मा को अपने साहित्य अवदान के लिए अनेक संस्थानों से सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए. स्मृति की रेखाएं शीर्षक पद्य कृति पर द्विवेदी पदक, रश्मि और नीरजा पर मंगला प्रसाद पुरस्कार, भारत सरकार से पद्मभूषण उपाधि से सम्मानित, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा प्रथम भारत-भारती पुरस्कार, यामा और दीपशिखा के लिए सन् 1982 में ही भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि. सन् 1960 में वे सर्वसम्मत से प्रयाग महिला विद्यापीठ की कुलपति निर्वाचित हुई. भारतीय परिषद् की ओर से 1964 में वृहद् अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, कुमायूं विश्वविद्यालय, नैनीताल तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से भी उपाधि से सम्मानित हुईं. महादेवीजी ने कविवर निराला की श्रेष्ठ कविताओं का एक संकलन अपरा नाम से सन् 1952 में साहित्यकार संसद की ओर से प्रकाशित किया. वे साहित्य अकादमी की सम्मानित सदस्या थीं तथा 1981 में इसकी फैलोशिप से सम्मानित हुईं. इनका निधन 11 सितम्बर 1987 को प्रयाग में हुआ.[15]

संदर्भ

1. हिन्दी साहित्य कोश, भाग १, प्रधान सम्पादक - धीरेन्द्र वर्मा, प्रकाशक- ज्ञानमण्डल लिमिटिड वाराणसी, तृतीय संस्करण १९८५, पृष्ठ २५१
2. ↑ हिन्दी साहित्य का अद्यतन इतिहास, डा॰ मोहन अवस्थी, संस्करण १९८३, प्रकाशक- सरस्वती प्रेस इलाहाबाद, पृष्ठ २५९
3. ↑ नामवर, सिंह (२००६). छायावाद. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ ११.
4. ↑ आचार्य रामचन्द्र, शुक्ल (२०१३). हिंदी साहित्य का इतिहास. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन. पृ॰ ४५५.
5. Romanticism Archived 2005-10-13 at the Wayback Machine .Retrieved 30 जनवरी 2008, from Encyclopædia Britannica Online Archived 2005-10-13 at the Wayback Machine
6. ↑ Casey, Christopher (October 30, 2008). ""Grecian Grandeurs and the Rude Wasting of Old Time": Britain, the Elgin Marbles, and Post-Revolutionary Hellenism". Foundations. Volume III, Number 1. मूल से 13 मई 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2009-06-25.
7. ↑ डेविड लेविन, हिस्ट्री एज़ रोमांटिक आर्ट: बैनक्रोफ्ट, प्रेसकोट, एंड पार्कमैन (1967)
8. ↑ जेराल्ड ली ग्युतेक, अ हिस्ट्री ऑफ़ डी वेस्टर्न एजुकैशानल एक्सपीरियंस (1987) सीएच. १२ जोहान हैनिरिक पेस्टालौज़ी

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

9. ↑ एश्टन निकोलस, "रोअरिंग एलिगेटर्स एंड बर्निंग टाइगर्स: पोयेट्री एंड साइंस फ्रॉम विलियम बार्टम टू चार्ल्स डार्विन," प्रोसीडिंग्स ऑफ़ द अमेरिकन फिलोसोफिकल सोसाइटी 2005 149(3): 304-315
10. ↑ "ए रिमार्केबल थिंग', बैज्रोव ने आगे कहा,'यह पुराने हास्यपूर्ण रोमानी! वे अपने तंत्रिका तंत्र से उत्तेजना की अवस्था तक काम करते हैं, इसलिए उनका साम्य बिगड़ जाता है।" (इवान टर्गेनेव, फादर्स एंड संस, अध्याय 4 [1862]) 4 [1862])
11. ↑ "Baudelaire's speech at the "Salon des curiosités Estethiques". मूल से 26 अप्रैल 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2014.
12. ↑ इसके सगीतमय आविर्भाव की विस्तृत चर्चा के लिए, संगीतमय राष्ट्रवाद देखें.
13. ↑ पूर्व प्राचीन शैली गैलेंत से लिया गया.
14. ↑ रेडहेड इट. एएल.,"नार्टन एंथोलोजी ऑफ़ इंग्लिश लिटरेचर,"द रोमांटिक पीरियड - वॉल्यूम डी" (डब्लू.डब्लू. नार्टन & कंपनी लिमि.) 2006 2006
15. ↑ वाल्टर फ्राइडलेंडर, डेविड टू डेलाक्रोइक्स से, 1974, इस विषय पर उपलब्ध सबसे अच्छा वर्णन जो शेष रह गया.

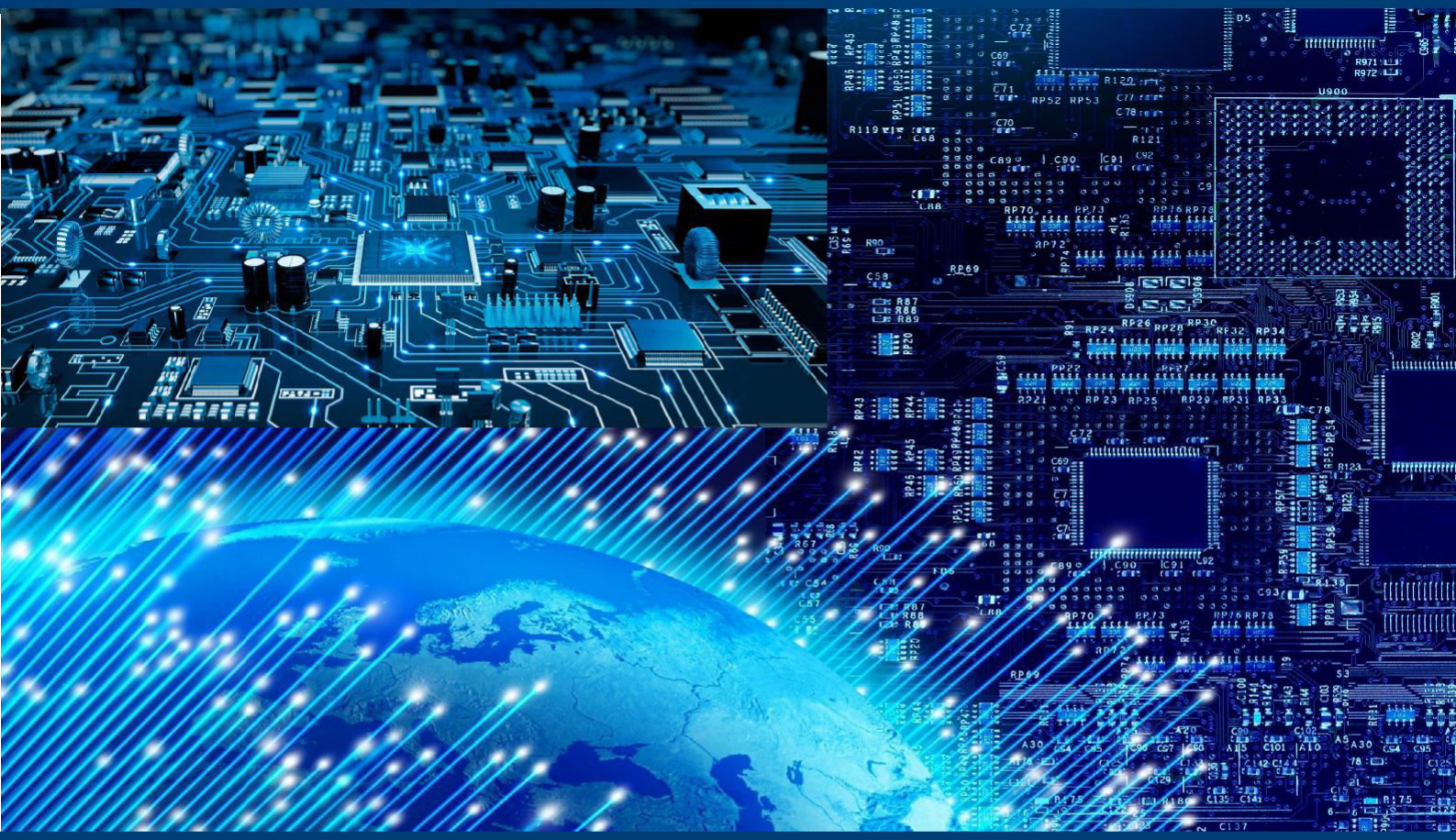

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |